पंचम-अध्याय

राजी सेठ का कथा साहित्य: भाषिक शिल्प

पंचम-अध्याय

राजी सेठ का कथा साहित्य: भाषिक शिल्प

- बिंबात्मकता
- प्रतीक योजना
- चित्रात्मकता
- प्रवाहात्मकता
- पात्रानुकूल भाषा
- भावात्मक भाषा
- काव्यात्मक भाषा
- व्यंग्यात्मक भाषा
- भाषा में सांकेतिकता
- उपमाओं का प्रयोग
- सूक्तवाक्य एवं सूत्रवाक्य का प्रयोग
- समांतर मूलक प्रयोग
- लेखिम स्तरीय प्रयोग
- ध्वनि पर आधारित समांतरता
- विचलनमूलक प्रयोग
- शब्दप्रयोग
- मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग
- लोकभाषा का प्रयोग
- नवीन व मौलिक प्रयोग

❖ **शैली**

- वर्णनात्मक शैली

- **आत्मकथात्मक शैली**
- **स्मृतिपरक शैली**
- **मनोविश्लेषणात्मक शैली**
- **चेतनाप्रवाह शैली**
- **भावात्मक शैली**
- **पत्रात्मक शैली**
- **डायरी शैली**
- **संवाद शैली**
- **स्वप्न शैली**

पंचम अध्याय

राजी सेठ का कथा साहित्य : भाषिक-शिल्प

भाषा भावों एवं विचारों का पारस्परिक माध्यम है | भाषा जीवन और साहित्य के बीच की कड़ी है | यह भावों की वाहिका होने के कारण सामाजिक उपलब्धियों तथा व्यक्तिगत अनुभवों एवं विचारों को समाज तक संप्रेषित करने का एक मात्र माध्यम है | "भाषा अनुभव को रिपोर्ट का तरीका मात्र नहीं है बल्कि वह अनुभव को रचने के लिए एक प्रारूप भी परिभाषित करती है |"[१]साहित्यकार की अनुभूति को पाठक तक पहुँचाने का माध्यम भाषा ही है | जिस रचनाकार की भाषा जितनी समृद्ध होगी उतनी ही कुशलता एवं सफलता से वह अपनी अनुभूति को पाठक तक पहुँचा सकता है |

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रयुक्त वैविध्यपूर्ण भाषा लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता की परिचायक है | राजी सेठ की भाषा के बारे में रमेश दवेजी कहते हैं-"राजी सेठ की प्राथमिकता यह है कि भाषा जैसी भी हो लेकिन भाषा में कथा की मृत्यु नहीं होनी चाहिए | यह कथाकार का पवित्र कर्तव्य भी है कि वह कथा को हर क्षण, हर शब्द, हर वाक्य, हर मुहावरे में ज़िन्दा रखे | भाषा में कितनी भी उत्ताल तरंगें उठें लेकिन उनसे कथा में निरूपित जीवन, अनुभव और संवेदन नष्ट नहीं होना चाहिए | राजी सेठ अपनी हर रचना में इन तीनों तत्वों की न केवल चिंता करती हैं बल्कि उनके प्रति अपने सर्जनात्मक संकल्प का निर्वेद भाव से काफ़ी हद तक निर्वाह भी करती हैं |"[२]

इस अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रयुक्त भाषा तथा शैली का अध्ययन किया है | राजी सेठ की कहानियों और उपन्यासों में निम्नलिखित भाषिक उपलब्धियाँ पायी जाती है :-

बिंबात्मकता :-

बिम्ब अंग्रेजी के 'इमेज' शब्द का पर्याय है जो किसी इन्द्रियगोचर पदार्थ की प्रतिच्छवि है | शब्दकोशों में 'Image'के कई अर्थ दिय गये हैं-'यथा प्रतिमा, प्रतिकृति, प्रतिबिम्ब, छाया या प्रतिच्छाया, इमेज द्वारा ही इमेजरी शब्द निर्मित हुआ है जिसके अर्थ मनसृष्टि, कल्पनासृष्टि, संकल्प भावना, वासना, उपलक्षण, लक्षण, आभास, अनुकार आदि है |

साहित्य में बिम्ब से तात्पर्य "कलाकार की उस क्षमता से है जिसके सहारे वह बीती हुई घटनाओं को ध्यान में रखकर उन्हें शब्द-चित्रों में वर्णित कर देता है | यह शब्द-चित्र ठीक वैसा ही होता है कि जिस घटना या वस्तु को उसने कभी देखा होता है | इसी कारण कलाकार को किसी घटना का हूबहू चित्रण या किसी वस्तु का रंग,रूप, प्रकार, ध्वनि और यहाँ तक की देश और काल के अनुरूप हूबहू वर्णन संभव हो पाता है |"[3]

कथाकार बिंबात्मक भाषा का प्रयोग मनोवैज्ञानिक स्थितियों की अभिव्यक्ति पूर्ण और सार्थक रूप से करने के लिए करता है | डॉ.नामवर सिंह भी मानते हैं- "बिम्ब वस्तुत: आधुनिक युग की कलात्मक अभिव्यक्ति का अनिवार्य माध्यम हो गया है |"[४]

वर्तमान औद्योगिक तथा यांत्रिक युग में जीवन वैविध्य, विसंगति और समस्याओं के अनेकत्व की विविध सारणियों में बँटा हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप मूल्य-परिवर्तन और मूल्य-विघटन

के साथ मानसिक और वैचारिक क्रमभंगता द्रष्टव्य है | आधुनिक व्यक्ति का व्यक्तित्व खंड-खंड में विभाजित हो रहा है और टूट बिखर भी रहा है | पारिवारिक और परिवेशजन्य चिंताओं ने उसे बुरी तरह से झँझोड़ दिया है | कहीं पारिवारिक संबंधों का विघटन उसे चिंतित कर रहा है तो कहीं परिवेशजन्य विभीषिका से उसका मन आक्रोश कर रहा है और कहीं सैद्धान्तिक अवमूल्यन के कारण उसका जीवन संत्रास से गुजर रहा है | नये साहित्यकारों ने मानव-मन की गुत्थियों और उलझनों के असंख्य आवरणों की तह तक पहुँचकर उन्हें खोलने के लिए कथ्य-शिल्प के नव्यतम साधनों को तलाश दिया | कलात्मक प्रयोगों में बिंब सर्वाधिक प्रभावी एवं सूक्ष्म माध्यम है | डॉ.शशिकला त्रिपाठी का कथन है-"अब बिंब-सर्जना सत्य को आत्मसात ही नहीं करती, पूरी कलात्मकता में थीम को संप्रेष्य भी बनाती है | कथानक की वैचारिकता को और अनुभव के अमूर्त स्वरूप को बिंब ही गहराई के साथ अभिप्रेत अर्थ तक ले जाते हैं |"[५]

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में बिंबात्मक भाषा अपनायी है | यहाँ कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

'पुनःवही' कहानी में राजी सेठ ने रुग्णता के त्रास का चित्रण बिंबात्मक भाषा द्वारा किया है-"अब घर के वातावरण में कराहें बिखेरती और मौत की दस्तकें देती कोई आहट नहीं है | मल-मूत्र की बदबू से असह्य भभकों को झुठलाती अगरबत्तियों के नन्हें-नन्हें लाल मुख से निकली धुँए की कमज़ोर रेखाएँ कहीं दिखाई नहीं देतीं | धब्बों की शक्ल अख्तयार करते जहाँ-तहाँ पानी के टुकड़े और सफ़ेद-चक्क दीवार पर अकड़कर सूखती जातीं बलगम की पीली मटैली लकीरें...."[६]

'गलत होता पंचतंत्र' में शिशु की अठखेलियों का चित्रण बिंबात्मक भाषा में हुआ है-"मूल में वही अर्थ टटोलती नन्ही-नन्ही उँगलियाँ, पीछे-पीछे, दौड़ते,गिरते-पड़ते,हारने से इनकार करते छोटे-छोटे पैर, निरीह भोलापन और अबोध आँखों में अदम्य जिज्ञासा की जगती-बुझती अछूती चमक |"[७]

'अंधे मोड़ से आगे' कहानी में राजी सेठ ने सुरजीत व मिश्रा की आदतों का वर्णन करते समय श्रौत बिंब को अपनाया है-"वह रोटी खाते समय चप्प-चप्प करता था,यह सोते समय खर्राटे लेता है |"[८]'तीसरी हथेली' कहानी में मौसम का चित्रण करते समय दृश्य बिंब उभरते हैं-"बादलों ने आकाश को गहरा घेर लिया और बूंदाबांदी की जगह मूसलाधार पानी बरसने लगा | देखते-देखते सड़के खाली हो गई | लोग इधर-उधर,फ़ुटपाथों पर सिमट गये | ऐसे में फ़ुटपाथ के साथ सिमटते-सिमटते जाना....सबकी दृष्टियों के सामने से गुजरना...ऐसी उतावली में जैसे वह ही है |"[९]

'योग-दीक्षा' कहानी में राजी सेठ ने लिज़ा बाटलीवाला का चित्रण करते समय घ्राण तथा दृश्य बिंबों का प्रयोग किया है-"पहली ट्युशन उसे लिज़ा बाटलीवाला की मिली-ब्रिगेडियर जॉय बाटलीवाला की पत्नी | उनका सामना करते ही उसे लगा कि रात का अलस खुमार अभी तक उनकी आँखों में तैर रहा है... झीने सफ़ेद पारदर्शी गाउन से लिपटी हैं वह....कुछ पास आयीं तो न जाने किस- किस प्रकार के प्रसाधनों की गंध के मिले-जुले झोंके ने उसके नथुने भर दिये |"[१०]

'नगर रसायन' कहानी का एक बिंबात्मक परिदृश्य अवलोकनीय है-"सत्या नाम की एक लड़की उसके दिल में फुलफुला रही है...और वह उसके एहसास को हाथ में आई मिठाई की तरह

बाँट लेना चाहता है...वह चाहता है जैसे वह उस नाम की जुगाली करता है, सब किया करें..."[११]

'यहीं तक' कहानी में पिता धर्म के आड़ में अपने दायित्वों से मुक्त होकर कर भगतजी की पदवी पा गया है, परंतु पुत्र उस पिता की ज़िम्मेदारियों को उसकी जगह ढो रहा है | यही कारण है कि उसे पिता के प्रवचनों के प्रति अनासक्ति है-"वह सब भीगे | तृप्त हुए, आकंठ डूबे | उनके चेहरों पर लिखी इबारतें पढ़ता-पढ़ता मैं भूल गया था उस निर्मम अंधेरे में अकेला जागते होने की बात¨हवा में डोलती बाबू की दीं वेद-पुराणों की सदाचारी सीखें | विरासत के बोझ को मैंने फ़ालतू समझकर झाड़ दिया था |"[१२]यहाँ दृश्य बिंबों द्वारा पात्र की अपने पिता तथा धर्म के प्रति उपेक्षा संकेतित हुई है |

'तदुपरांत' कहानी में औरतों की पार्टियों में परस्पर बातचीत को श्रौत बिबं द्वारा व्यक्त किया गया है | "इंपोरियम में सेल | दर्जियों की ढिठाई | लहसुन जैसी नाचीज की मँहगाई | उग्रवादियों का मौखिक सत्यानाश और औरतों पर बलात्कार | कितनी ही चीज़ों को वक्त के थैले में डाल कर एक साथ बजाया जा सकता है, उसने ग़ौर किया | बीच-बीच में कपिला से गाने का इसरार भी चल रहा था |"[१३]यहाँ लेखिका ने थैले का बिबं देकर इन बातों की श्रृंखलाहीनता दिखाई है |

'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा की उदास मन:स्थिति को राजी सेठ ने दृश्य एवं स्पर्श बिंब द्वारा अभिव्यक्त किया है- "उदासी के चाकू की उस ठंडी चमकीली धार को वह जानती है जो साँवले धुँधलके के बीचोबीच उस घड़ी कुछ समय के लिए मन में थिर हो जाती है,चीरकर पार नहीं निकलती |"[१४]वसुधा की अकेलेपन

की पीड़ा को लेखिकाने बिंब द्वारा अभिव्यक्त किया है- "अँधेरे की अभ्यस्त आँखों को चुभ रहा है धूप धुला आकाश | विपुल प्रकाश | ऐसे आहत हो रही है जैसे किसी ने सिनेमाघर के ठंडे आत्मतुष्ट अँधेरे में बेहद सच होते संसार की अटूट विश्वसनीयता में से खींचकर उसे दोपहर की धूप की बेदर्दी के हवाले कर दिया हो |"[१५]

'निष्कवच' उपन्यास के 'द्वितीय वृत्तांत' का नायक जब अपने और श्यामली के संबंधों के बारे में सोचता है तो उसे बंदी होने का स्मरण आता है- "मैं विचार को भीतर से स्थगित कर डालता हूँ और बाहर टहल आता हूँ | आँगन में खुले में सिर के ऊपर आकाश का एक टुकड़ा बंदी है | नीचे दीवार के साथ हरी-भरी, फली-फूली क्यारियाँ पसरी हैं | ईटों से घिरी उस हरियाली पट्टी में से मैं उस बिरवे की तलाश करने लगता हूँ जो श्यामली की बगीचे में से एक हरे-भरे संबंध के आदर में लाकर लगाया गया था |"[१६]

प्रतीक योजना :-

'प्रतीक' शब्द के अनेक अर्थ हैं | जैसे-पताका, मुख, आकृति, प्रतिरूप, प्रतिमा आदि | किसी मूर्त के माध्यम से किसी अमूर्त की पहचान को प्रतीक-स्वरूप ही कहा जा सकता है | प्रतीक अभिव्यक्ति का वह माध्यम है, जो अभिव्यक्ति को अर्थ-सुलभ बनाता है | डॉ. देवराज स्वीकार करते है,"कलाकार की एक अनुभूति होती है और उसके प्रकाशन के लिए वह ऐसे प्रतीकों की खोज करता हैं जो कूल मिला कर दुबारा वही या उस जैसी अनुभूति उत्थित कर सके |"[१७]

डॉ.नगेंद्र का कथन है-"प्रतीक एक प्रकार से रूढ उपमान का ही दूसरा नाम है; जब उपमान स्वतंत्र्य न रहकर पदार्थ विशेष के

लिए रूढ हो जाता है तो वह प्रतीक बन जाता है |"[१८]कथाक्षेत्र में प्रतीक विधान की उपयोगिता यह है कि इसके द्वारा एक से अधिक भावों की अभिव्यक्ति की जा सकती है |

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतीकों का प्रयोग बहुल मिलता है | डॉ.कश्मीरी लाल ने कहा है कि-"राजी सेठ आंतरिक संसार की सूक्ष्म संस्थितियों का चित्रण करने में सिद्धहस्त है | वे अघटित को प्रतीकों द्वारा संवेद्य बना डालती हैं, अदृष्ट को गोचर |"[१९] यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

'अमूर्त कुछ' में सुम्मि तथा कप्पी के बीच मधुर संबंधों का संदेह सुम्मि के भाई के मन में पक्का कर डालने के लिए राजी सेठ ने प्रतीक का प्रयोग किया है | जैसे -"सुम्मि का सिर नीचा है और चाय का कप उसके सम्मुख रखा है, जिस पर एक गहरे रंग की पतली झिल्ली ठहर गई है | वातावरण की गंध को क्या कहकर समझने की कोशिश करूँ,मेरी समझ में नहीं आया | कप्पी अपनी चाय पीने लगा |"[२०]यहाँ 'चाय पर ठहरी हुई गहरे रंग की पतली झिल्ली' सुम्मि तथा कप्पी के बीच प्रेमालाप के कारण उपेक्षित पड़ी चाय की प्रतीक है | देर से पड़ी चाय सुम्मि और कप्पी के लिए एक बहाना है पास पास बैठने का |

लड़कियों के युवा होते ही उनके माता-पिता उनके विवाह के विषय में सोचते रहते है |'अस्तित्व से बड़ा' कहानी में रीनू के पिताजी को जब रीनू और सुमंत के विवाह के बारे में पूछा जाता है तब वह कहते हैं-"इस फूल को किसी देहरी पर तो रखना ही है,यही सही |"[२१]यहाँ 'फूल' शब्द प्रतीक है | फूल शब्द से प्रतीकात्मक अर्थ निकलता हैं जो लड़की की कोमलता, सौंदर्य का वस्तुवादी दृष्टिकोण संकेतित करते हैं |

'किसका इतिहास'कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है- "माँ को लगा कि कम से कम पेड़ तो बच गया, हरियाली चाहे सूख गयी है |"[२२]इस उदाहरण में 'पेड़' देशविभाजन में अनेक संघर्षो को झेलते आये बाबूजी का प्रतीक है तो 'हरियाली' उन्होंने पाकिस्तान में जो अपनी संपत्ति खोयी हुई थी, उस संपत्ति का प्रतीक है |

'तीसरी हथेली' कहानी का नायक नंदिता को लेकर पिक्चर देखने जाता है,परंतु नंदिता पिक्चर को अधबीच छोड़ कर बाहर आ जाती है | वह नायक से कहती है-"चलो, बाहर चलें | यहाँ बेमतलब बैठे हम बेवक़ूफ़ों की तरह क्यों दूसरों का तमाशा देख रहे हैं |"[२३]वह नायक का हाथ पकड कर अंधेरे को चीरती हुई बाहर चली आती है | यहाँ 'अंधेरा' उन दोनों के बीच के संबंधों की अनिश्चितता का प्रतीक है |

'यहीं तक' कहानी में 'अंधेरा' प्रतीकात्मक रूप में चित्रित हुआ है-"उस रात मैं सो नहीं पाया | अँधेरा मुझे बड़ा निर्मम लगा था | सुबह उठने पर जान में जान आयी थी | सुबह में सेंक था | रोशनी थी | चीज़ों के सही आकर-प्रकार दिखाकर अँधेरे के भय-भ्रम को तोड़ सकने की शक्ति |"[२४]'यहीं तक' कहानी का नायक गृहस्थी के बोझ के कारण भ्रष्टाचार जैसा कृत्य करने के लिए विवश हो जाता है | भ्रष्टाचार करने पर वह रातभर सो नहीं पाता | यहाँ 'अँधेरा' नायक के नैतिकता के हनन का प्रतीक है | 'रात' मनुष्य की अंतरात्मा के चेतन का प्रतीक है तो 'सुबह' संसार की व्यावहारिक और संक्रमणपूर्ण अवसरवादिता का प्रतीक है |

'उसी जंगल में' कहानी की नायिका का पति बदचलन है | पति की बदचलनी से नायिका संत्रस्त है-"आधी रात के भी आगे का पहर | कुत्तें की रिरियाती हुई हूँ | चौकीदार के लट्ठ की दबंग

थाप, सन्नाटे-भरी रातें और खाट पर पड़े-पड़े इंतजार…और-और इंतजार | कितनी-कितनी बार लिहाफ़ से निकलकर बुझती अँगीठी में कोयले झोंकती हैं,जिनकी लपलपाहट हर बार बुझने देता है |"[२५] यहाँ 'बुझती अँगीठी' नायिका के बुझते जा रहे पत्नीत्व का प्रतीक है जो उसके बदचलन पति के कारण क्षरित होता जा रहा है | 'सन्नाटे भरी रातें' नायिका की उजाड़ रातों का प्रतीक है जहाँ पर पति के सुखद साहचर्य का केवल इंतजार है |

'बाहरी लोग' कहानी में बेटे की चिंता में डूबती वृद्ध माँ की मन:स्थिति का चित्रण लेखिका ने प्रतीकों के माध्यम से किया है- "बाल्कनी में रोशनी है,भीतर घुप्प अँधेरा |"[२६]यहाँ भीतर का 'अँधेरा' माँ के मन में घिरी दुश्चिंताओं का प्रतीक है | 'बुत' कहानी का शीर्षक ही प्रतीक है, जिसमें राजी सेठ ने पत्नी की नि:शब्द चीख, सूनी एवं अनासक्त उपस्थिति को अभिव्यक्त किया है | इसमें पत्नी का जीवन एक मूक यंत्र-सा हो गया जो पति के परिचालन से चलता है, परंतु हँस बोल नहीं सकता |

'तत-सम' उपन्यास में 'दीवारें'प्रतीकात्मक रूप में चित्रित हुई है-"सामने दायें-बायें दीवारें हैं |"[२७]ये दीवारें नारी का रास्ता रोके हैं | कहीं प्रथाओं तो कहीं संस्कारों के रूप में | ऐसी प्रथा रूपी दीवारों के समक्ष वसुधा जैसी जाने कितनी भारतीय नारियों का उत्साह भंग हो जाता है |

'निष्कवच' उपन्यास के 'प्रथम वृत्तांत' में प्रतीकात्मक प्रसंग का उदाहरण है-"मैं जड़ छूने जाकर पेड़ को झिंझोड़ कर आ गया हूँ और पेड़ है कि मेरे हटते ही थम गया है-यथावत |"[२८]यहाँ 'जड़' नीरा का प्रतीक है और 'पेड़' बासू का | नीरा के प्रति बढ़ती बासू की प्रेमाशक्ति को अनुभव करके विशाल बासू को डाँट आता है |

चित्रात्मकता :-

भाषा की चित्रात्मक शक्ति उसकी कथ्य क्षमता में सहायक होती है | कहीं-कहीं पात्रों का चरित्रांकन करते समय, किसी दृश्य का वर्णन करते समय पूर्णरूपेण शब्द चित्र ही प्रस्तुत कर देते है |

राजी सेठ के साहित्य की चित्रात्मकता यह सबसे बड़ी विशेषता है | राजी सेठ कलम और शब्दों का प्रयोग मानो रंग और तूली के समान करते हुए केनवास पर चित्र उतार देती है | सारा दृश्य, परिदृश्य नेत्रों के समक्ष चित्रों के समान उपस्थित हो जाता है | वह भाषा का प्रयोग इस कदर करती है कि वह प्रसंग सामने चित्र की भाँति दिखने लगते हैं | राजीजी चित्रात्मक विधानपूर्ण भाषा अपनाती है | यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

'समांतर चलते हुए' कहानी के नायक की मन:स्थिति को राजी सेठ ने चित्रात्मक भाषा में अभिव्यक्त किया है-"एक मैं ही था जो किनारों से दूर बहता अपनी पहचान के घेरे से बाहर चला आया था | लगने लगा था,ऐसे स्थल पर खड़ा हूँ,जहाँ बीहड़ विस्तृत रेगिस्तान है, अकेलापन है, अकुलाहट है, रीते दरीचों से गुज़रनेवाली हवा का शोर है, और कुछ नहीं |"[२९]

कप्पी के मृत शरीर का चित्रण राजीजी ने 'अमूर्त कुछ' कहानी में इस प्रकार किया है कि कप्पी के एक्सीडेंट का पूरा परिदृश्य सजीव हो उठता है-"मेरे पहुँचने से पहले कप्पी मर चुका था | उसकी पुतलियाँ कोटरों से बाहर आ गई थीं और वह मांस का लोथड़ा-सा खून के दरिया में पिघल रहा था |"[३०]

'गलियारे' कहानी के देवा की स्मृति में उसके घर का जो चित्र उभरता है उसका वर्णन लेखिका ने इस प्रकार से किया है"उबड़-खाबड़ लाल ईटों का फर्श....बीच-बीच में सीमेंट उखड़ी हुई |

कोने में ऊँचा अकेला-सा नल,ढार-ढार पानी फेंकता हुआ ।"[३१]'सदियों से' कहानी की पत्नी अपने प्रेमी के पत्रों को जला देती है । उन प्रेम-पत्रों के जलाये जाने का जो दृश्य है, उसका वर्णन इसप्रकार से किया है-"तसले में जलते काग़ज़ अब काली भभूत के चीथड़े जैसे दीखने लगे थे और ऐंठते से तसले के छोरों पर पसरने लगे थे...एक छोर से गाढ़ी सी धुआँस उठी और लपट बनने को लपकने लगी ।"[३२]

'विकल्प' कहानी में लेखिका ने दिल्ली के फुटपाथों पर बनी बस्तियों की विपन्नता को दर्शाने के लिए चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है-"सामने सड़क को दो भागों में बाँटते पक्के फुटपाथ पर आर-पार खुले आच्छादनों की एक कतार दीखी थी । दीवार का सहारा लेकर दो मोटी लट्ठों पर टिके आच्छादन । उन छतों को निर्मित करते टीन, टाट और फूस के टुकड़े । जीर्ण-शीर्ण कपड़े...प्लास्टिक की थिगलियाँ ।...नंगे बच्चे ।...घुटने और स्तन उघाड़े बैठी स्त्रियाँ ।...एक-दूसरे के सिर से जुएँ बीनती किशोरियाँ ।...टीन के डिब्बे...अल्यूमिनियम की हांडियां..."[३३]

'आगत' कहानी में चित्रात्मक भाषा का उदाहरण प्रस्तुत है-"उसके माथे पर पसीना-जैसा चुहा आया था । जाड़े में । परम पीला रंग,जैसे त्वचा की पहली दो परतों के नीचे की सतह पर किसी ने पीले रंग की कूची फेर दी हो । वह कितना थक गया है,साफ था ।"[३४]उक्त उदाहरण में एक कमजोर व्यक्ति के स्वास्थ्य को चित्रात्मक भाषा द्वारा चित्रित किया है ।

'एक कटा हुआ कमरा' कहानी में चित्रात्मकता का उदाहरण है-"एक कोने में एक टेबल पर अस्त-व्यस्त लदी-ढकी किताबें । साथ में लगा एक बहुत बड़ा पलंग, गंदे मलगुझे कपड़ों के ढेर से

लदा | एक कोना जो बचा था वहाँ अपनी थोड़ी-सी उपयोगिता सिद्ध करता एक भीमकाय पैरोंवाला पालना |"[३५]

'तत-सम' उपन्यास में लेखिका ने दिल्ली के अंतर्विश्वविद्यालयीन युवा समारोह का दृश्य प्रस्तुत करने के लिए चित्रात्मकता भाषा को अपनाया है-"प्रवेश द्वार से प्रांगण के रास्ते के दोनों ओर फहराती रंग-बिरंगी पताकाएँ,जिन पर अलग-अलग विश्वविद्यालय के प्रतीक-चिन्ह छपे हैं, दायीं ओर छूट गयी हैं; और पूरे विस्तार में दूर-सुदूर तक चले गये आलोक-स्तम्भों की कतारें बायीं ओर |...चहल-पहल का हिलता-डुलता अथाह | उमंग | गति | शोर !... लगता है एक बड़ा सा परिवार हँसने-खेलने के लिए यहाँ आ जुटा है |"[३६]

'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत एक में भाषा में चित्रात्मकता दिखायी देती हैं | जैसे विशाल बासू के साथ अपना संबंध बताते कहता है-"हमारा संबंध ऐसा, जैसे दो बाँसों के बीच बँधी रस्सी का साफ़ सुथरा तनाव |"[३७] विशाल बासू को अपनी पारिवारिक दबाव के बारे में बताता है तो बासू कहता है-"तुम्हें अगर लता की तरह बढ़ना है तो तुम पेड़ से नाता क्यों तोड़ते हो |"[३८]

'निष्कवच'उपन्यास के दूसरे वृत्तांत में नायक अमेरिका जाना चाहता है,लेकिन जब उसके पिताजी उसे तरह तरह के सवाल पूँछते है तो नायक को लगता है-"पापा ने मेरे मन में बनती बहुमंजिली इमारत ढा दी थी |"[३९]'निष्कवच' उपन्यास के दूसरे वृत्तांत का नायक घूमते-घूमते एक हलवाई के दुकान के पास पहुँच जाता है जहाँ हलवाई जलेबियाँ बना रहा था-"घी की कड़ाही में नाचती घूमती फिरकी जलेबी दिलचस्प लग रही थी |"[४०]

राजी सेठ ने इस तरह की भाषा का प्रयोग किया है कि जैसे हूबहू चित्र सामने आते हैं |

प्रवाहात्मकता :-

प्रवाहात्मकता यह कहानी की भाषा का सर्वप्रथम गुण है | यह गुण विशेष रूप से किसी चित्र,दृश्य,घटना एवं प्रसंग से संबंधित होता है | यह गुण प्राय: वर्णनात्मक शैली में लिखित कहानियों में उपलब्ध होता है | राजी सेठ की कहानियों में भाषा का यह गुण अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है | कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

'अमूर्त कुछ' कहानी का उदाहरण-"कप्पी का एक्सीडेंट हो गया है,बचने की आशा नहीं है, यह समाचार मुझे ऑफिस में ही मिला | ऑफिस छोड़ने की अनुमति के लिए मैंने बॉस को फोन करना चाहा | नंबर दो-तीन बार डायल करने पर जुड़ पाया | समाचार का आवेग उँगलियों तक चला आया था | बॉस कुर्सी पर नहीं थे | बदहवास-सा मैं नीचे दौड़ा |"[४१]

'अनावृत कौन' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है-"सुख कितने अनजाने स्त्रोतों से, कितना अचानक कितना दबे पाँव आ निकलता है,वह नहीं पहचानता...कभी कविता की कोई पंक्ति,आँख में चमकता कोई अनकहा आग्रह,छोटी सी कोई बात, पगडंडियों पर चुपचाप चलते रहना...कितना सुख दे जाते हैं और कभी सागर के सम्मुख सुख के स्वागत के लिए लैस होने पर भी कुछ भीतर नहीं जागता | मुँह और आँखों में केवल रेत किरकिराती रहती है और सागर-मुद्राओं को देखने में भी असमर्थ कर देती है | तब वहाँ बैठे रहने की अपेक्षा चले आने का भाव अधिक होता है |"[४२]

'घोडों से गधे' कहानी का एक उदाहरण-"उनके भीतर का असली भेद उसने पा लिया है | जब तक घर में रहती हैं ,आसपास

मँडराता रहता है | मुँह धोने जा रही हों तो तौलिया लेकर खड़ा हो जाता है | नहाने जा रही हों तो स्लीपर बाथरूम के पास रख आता है | तैयार हो गई हों तो टुकुर-टुकुर देखता रहता है और कपड़ों के जोड़ के सैंडिल लाने दौड़ता है | हरे, लाल, काले, भूरे, स्लेटी |"[४३]

'इन दिनों' कहानी का एक उदाहरण-"वे बूढ़े तो नहीं हुए थे,अकेले जरुर छुट गये थे | बेटे नौकरियों पर बेटियाँ अपने घर | पत्नी के प्रति एक विरसता | शायद साथ रहते-रहते चीज़े निरश और भोथरी हो जाती हैं | संभव है पत्नी को ऐसा लगता हो पर मजाल है जाहिर होने दे या चूक जाए | ऐसी गजब की तैनाती; रोटी-पानी,दवा-दारू,कपड़ा-लत्ता,सार-सेवा,दुनियादारी सब उसी रमते भाव से करती है |"[४४]

पात्रानुकूल भाषा :-

राजी सेठ ने अपनी कहानियों में पात्रों की आँचलिकता, मन:स्थिति और वैचारिक स्तर के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है | उनकी कुछ कहानियों में पात्र अंग्रेजी,पंजाबी,गुजराती मिश्रित अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देते है |

'योग-दीक्षा' कहानी की लीजा बाटलीवाला की भाषा में अंग्रेजी और गुजराती भाषा का मिश्रण दिखाई देता है-"आठ बजे हम सोकर उठता...योगा करेगा...ब्रेकफास्ट लेगा | जल्दी उठने को सकता, पन ब्रेकफास्ट, यू नो ब्रेकफास्ट वगर रहने को नहीं सकता | तुम साढ़ा आठ कू आयेगा...हाफ एन आवर सिखायेगा...अर्द्धा कलाक...नहीं ?...नौं तक ब्रेकफास्ट...मस्ट ! मस्ट ! मस्ट ! ...मस्ट हैव इट...सिंस हमारा ऑपरेशन हुआ...हंग्री....भूका रहने को नहीं सकता | हियर..."[४५]

'मेरे लिए नहीं' कहानी के पात्र प्रीति और भास्करनराव उच्च

अधिकारी हैं | उनकी भाषा में अंग्रेजी का प्रयोग दिखाई देता है | "आयम आलसो नाट वुड ऑर स्टोन |"[४६] "वुड यू केयर फॉर ए कप ऑफ टी दिस आफ्टर-नून ?"[४७]'विकल्प' कहानी का अश्विनी विदेश में रहने के कारण अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करता है | उसके बच्चे भी भारत आने पर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देते है-"व्हाय देयर इज नो लाइट इंसाइड अंकल |"[४८]'अभी तो' कहानी का विमल अंग्रेजी का प्रयोग अधिकतर करता हुआ दिखाई देता है | वह अपने बच्चे को अंग्रेजी मीडियम में पढ़ाना चाहता है | इसीलिए वह अपने बच्चे के साथ अंग्रेजी में ही बातें करता है-"पप्पी हियर ! ऐंड देयर !, इज़ युअर नोज़ ?, ऐंड युअर इयर्स ?, ऐंड आईज ? ऐंड लिप्स ?"[४९]"द ब्लेम आफ बैरेननेस...गॉड इज़ रियली ग्रेट..."[५०] "टेक इट ऐज़ ए क्लोज़्ड चैप्टर"[५१]नाऊ कम आन...डोंट पनिश योरसेल्फ...!..कम विद मी |..."[५२] "ही हिज टू बी ट्रेंड फार हिज व्लर्ड एंड नाट युअर व्लर्ड..."[५३]

'पुल' कहानी में पात्रों की भाषा में पंजाबी भाषा का पुट दिखाई देता है | "सजरी-ताजी बनी रहे वाहे गुरु की सीख |"[५४]"नेमतोंवाली मुट्ठी खोल मेरे मालिक | इस अभागी को सबर की सौगात दे...नहीं दे सकता तो इसको भी अपनी बस्ती में दाखिल करे |"[५५]

'परतें' कहानी में दिलावर की भाषा में पुलिसिया भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है | "चल पता लिखा अपना…बाप का घर का, गाँव का सब कुछ | चल बोल |"[५६]"चोप्प पण्डितउ…आगे मत बोलना नहीं तो बाजी उलट दूँगा | इसी इल्ज़ाम पर दो साल चक्की पिसता नजर आयेगा | यह भली चलायी…न खुद खाओ, न दूसरे को खाने दो | मैं तुझसे सच बोल रहा हूँ, इसलिए आँखे दिखा रहा

है ? मैं ठान लूँ न तो अंदर बैठी को गायब कर दूँ | तेरी चौकीदारी को सू तक न लगे |”[५७]

'तत-सम' उपन्यास के अधिकतर पात्र शिक्षित है | उनकी भाषा में अंग्रेजी भाषा का पुट मिलता है | “लुक एट द वे मैरेजेज़ आर सेलीब्रेटेड आय मीन रिलेशनशिप्स एम्फेसाइज्ड...|”[५८]“आय एडमायर योअर प्रोग्रेसिवनेस बट आयम टू आर्थोडॉक्स ऐज़ यू सो करेक्टली ऑब्ज़र्वड |”[५९]“अदर-वाइज़ यू आर सो ईज़ीली एक्यूज्ड ऑफ लैक ऑफ पार्टिस्पिेशन !”[६०]

भावात्मक भाषा :-

भावात्मक भाषा प्राय:करुणा से आप्लावित अनुभूति जैसे प्रसंग एवं चिंता से युक्त संदर्भ में अधिक मिलती है | भावात्मक भाषा का संबंध साधारणत: मनोभावों एवं विचारों से उद्भूत होता है | राजी सेठ ने इस भाषा का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है |

'समांतर चलते हुए' कहानी का उदाहरण-“और फिर समधुर अपेक्षाओं को क्रूरता से रौंदता एक दिन-एम्बुलेंस, अस्पताल,डॉक्टरों के चिंता से गहराते चेहरे | इमरजेंसी में उभर आयी नर्सों की सतर्क तत्परता | साँस में दारुण कष्ट....एक न टूटनेवाली बेहोशी...अन्तत: विषैली हो गए अनीता के रक्त से केवल मिलिंद की ही रक्षा की जा सकी | मेरी अप्रस्तुत क्षमता पर उत्तरदायित्व का एक पहाड़ रखकर वह चली गई |...भयाकुलता और घटनाओं की वेगमयता के कारण मैं खुलकर रो भी न सका था | अनिश्चित भविष्य और बोझिल दायित्व के समक्ष भौंचक्का खड़ा रह गया था |”[६१]

'अभी तो' कहानी का विमल अपनी पीड़ा को पत्नी के समक्ष व्यक्त करता है-“मन में लहर हुआ तो लगता था-वृंदा मैं असल समाजवादी हूँ | मेरी धन-दौलत सब दूसरों के नाम है और

जब ढह जाए तो लगे कितना अभागा हूँ | एक गये गुजरे आदमी के पास भी जो हक़ है,वह मेरे पास नहीं है....आय मीन कंटीनूएशन का अधिकार ! संसार से उठ जाने पर भी किसी न किसी रूप में संसार में बने रहने की विलक्षणता |"[६२]

'पुल' कहानी में कर्त्तार सिंह का बेटा दुर्घटना में बुरी तरह से घायल हो चुका है | वह अंतिम साँसे ले रहा है-"उफ् ! ऐसी चिथड़ा देह और अभी तक साँस ले रहा है",किसी ने अस्पताल के गलियारे से गुजरते उसे देखकर कहा था | कर्तार ने चाहा था आगे बढ़कर थप्पड़ जड़ दे | देखता नहीं ऐसी जवान, दम- खामवाली देह…क्या इतनी आसानी से पौंड़ियाँ उतर जायेगी इस दुनिया की | फिर कर्तार का अन्न भी कोई ऐसा खोटा नहीं था…|"[६३]

काव्यात्मक भाषा :-

प्राय: कथाकारों की भाषा स्थूल वर्णनात्मक हुआ करती है | जिसमें बाह्यघटना,प्रसंगों का विस्तार प्रस्तुत किया जाता है | किन्तु मानव संबंधों की जटिलता, रागात्मक अनुभवों का सम्प्रेषण तथा रचनाकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति सृजन के श्रेष्ठ क्षणों में अपने लिए एक सूक्ष्म एवं मौलिक भाषा का आविष्कार करती है | यह व्यंजना पूर्ण काव्यात्मकता से भरी हुई लयात्मक भाषा होती है | इसी को काव्यात्मक भाषा के नाम से जाना जाता है |

राजी सेठ कहानीकार, उपन्यासकार होने के साथ साथ वह कवयित्री भी है | उनके गद्यांश को पढ़ते समय ऐसा महसूस होता है कि हम गद्यांश नहीं बल्कि कविता पढ़ रहे है | राजी सेठ को कोमलता एवं सौंदर्यबोध के प्रति गहरी आस्था होने के कारण उनके कथा साहित्य की भाषा प्राय:काव्यात्मक है | कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है-

'समांतर चलते हुए' कहानी का नायक अपने वैवाहिक जीवन की यादों को स्मरण करता है तब वह भाव विभोर हो जाता है-

"गहन उन्माद और मादकता में -
डुबो देनेवाले सुख -
देह पिघलाती गरमाइयाँ -
और मन को सराबोर करती गहराइयाँ -
तन,मन की पूर्णता में हिलोर लेते तीन वर्ष...
फिर दो के स्वप्नों को -
नया अर्थ देनेवाले -
एक तीसरे के आने की संभावना ।"[६४]

'अपने दायरे' कहानी की नायिका मृत्यु को अपने आस-पास महसूस करती है-

"धरती पर पड़ी पिन को
जैसे चुंबक का टुकड़ा दिखाकर
यकायक उठा ले,
ऐसा ही लगता है,
यह जीवन का क्रम ।
चाहे-अनचाहे किसी अज्ञात घड़ी
उठा लिया जायेगा यह अस्तित्व ।
यह क्षण हमारा चुना हुआ नहीं होगा ।
उस घड़ी पर हमारा अधिकार नहीं होगा ।"[६५]

'ढलान पर' कहानी की चारु अपने पति तथा घर में उपेक्षा अनुभव करने लगती है । चारु की मन की भावनाओं का वर्णन करने के लिए काव्यात्मक भाषा को अपनाया है-

"हूँ या नहीं

मैं इसे लेकर नहीं बैठी ।
है तो ठीक.....
नहीं है तो भी ठीक !
उनके वंश का जुआ उठाने वाला बैल नहीं हूँ मैं !
लाये और एक घर मैं स्थापित कर दिया जैसे
मैं इन्सान को नहीं,घर को ब्याही गयी हूँ !
घर तो वहाँ भी था....."[६६]

'गलियारे' कहानी के देवा को दीदी का आगमन ॠतु के आगमन की तरह मोहक लगता है -

"जानता था,
अभी एक आवाज ,
उन लंबे गलियारों को पार करती हुई आयेगी ।
और उसके कमरे के बाहर आकर थम जायेगी ।
देखते ही देखते एक ॠतु की तरह,
यहाँ की हवा में बस जायेगी ।"[६७]

'पुल' कहानी में घरेलू औरतों की दिनचर्या का वर्णन काव्यात्मक भाषा द्वारा किया है -

"भाइयों के, भतीजों के, बहनों के ।
चाहते, न चाहते ।
दोपहर के ग्यारह बजे ।
जब जब औरतें रेंगते रेंगते
घरों के कारखाने से
निकलती हैं और बान के
खटोलों पर आ बैठती है ।"[६८]

'परतें' कहानी में तिन्नी के उमगते वक्ष की उद्दाम मादकता का चित्रण काव्यात्मक भाषा में किया है-

"उस किशोर द्वारा फेंकी गयी गेंद को
तिन्नी उचकती,फिर वापस फेंकती,
फिर उचकती फेंकती |
तंग कुरते में कैद भराव
उस उछलने के साथ
उछलते और गिरते |"[६९]

'राजी सेठ ने 'पुतले' कहानी के आरंभ में ही देश के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाले वीर जवानों की वीरता को काव्यात्मक भाषा द्वारा अभिव्यक्त किया है |

"उसे भी हिंदी गाने पसंद हैं जैसे तुम्हें / उसे भी
इंजेक्शन लगाने नफरत है जैसे तुम्हें / वह
भी उसी तरह रोता है जब अमिताभ मरता है /
उसने भी वैसे ही प्यार किया जैसे तुमने / चोट
लगी तो उसका भी खून बहा जैसे तुम्हारा / वह
भी प्रसन्न होता है जब घर पर रहना होता है /
फुहार पड़ने से धरती की गंध उसे भी उतनी
ही पसंद है जितनी तुम्हें / वह भी उत्फुल्ल
होता है जब भारत मैच जीतता है / वह भी
अपने बच्चों के लिए सपने साथ लेकर सोता है
जैसे तुम / पर...पर वह जिन परायों के लिए
मरने गया है...वह तुम हो "[७०]

'तत-सम' उपन्यास के आंरभ में ही एक सुंदर कविता दी है | इन पंक्तियों में बिल्कुल विपरीत जीवन-स्थितियों का वर्णन है,

जिसके द्वारा जिजीविषा के अनुसंधान के केन्द्रिय विचार की अभिव्यक्ति हुई है-

"दीखी, मुझे
सागर के रेतीले सिराहने पर
खड़े पैरों की आवेग-भीत आतरता
दीखा–
बालू की बेईमानी अस्थिरता में
पंजे अड़ाकर
लहरों के विजयदर्प को झुठला पाने का
आदीप्त हठ, भी तो |"[७१]

'तत-सम' उपन्यास की वसुधा की दृष्टि इधर-उधर भाग रही है | वह अपनी दृष्टि को एकाग्र कर नहीं पा रही | उसकी दृष्टि विवेक को खोज रही है-

"ध्यान का चोर,
भटक लेता रहा |
खोज़ता रहा कोने
सिरों की भीड़ के बीच,
अटक-अटक जाती रही दृष्टि |
खाली से लगते पार्श्वो की हदें |
प्रांगण की सड़कों पर चलते
अकेले इकट्ठे लोग |
खाने का मंडप |
पुरुषों के आवास के बाहर का फैलाव |
.....यह तो दृष्टि है |
भागती हुई |

पैरों के सामर्थ्य से भी तेज...
अपनी त्वरा में अदृश्य के
ध्यान को भी छू लेने को तत्पर...|"[७२]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत एक' में बासू नीरा के प्रेम में नीरा द्वारा ढगे जाने पर परास्त हो चुका है | बासू अपनी संवेदना को विशाल के सामने व्यक्त करते समय कहता है-

"क्या सुनना चाहते हो कि मैं ढगा गया.....
गलत सिद्ध हुआ ? मुर्ख निकला ?
अच्छा लगेगा तुम्हें क्योंकि कब से टोक रहे थे तुम मुझे |
अच्छा लगेगा क्योंकि मुर्ख आदमी वैसे भी
अच्छे लगते हैं लोगों को |"[७३]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' के नायक को अपना देश, अपनी धरती, अपने लोगों से दूर बेगानी धरती पर जाना पड़ता है | वह अमेरिका लौटने को विवश हो जाता है -

"लो जाता हूँ देश |
तुम्हें मैं कभी देख सुन-छू नहीं सका |
मुट्ठी में पा जाने को ललकता रहा |
मुट्ठी एक मिली मार्था |
लो, जाता हूँ मैं |
गया नहीं तो सारे झूठ निथर जायेंगे |
झूठा कहलाऊँगा |"[७४]

व्यंग्यात्मक भाषा :-

व्यंग्य साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है,जिसका लक्ष्य विसंगति एवं विद्रूप का पर्दाफाश कर उस पर प्रहार करना है | हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी व्यंग्य को

जिन्दादिली मानते हुए कहते है-"व्यंग्य सेन्स ऑफ ह्यूमन है,जो अन्याय,अत्याचार और निराशा के विरुद्ध होने से व्यंग्य में अभिव्यक्त होता है ।"[७५]

समाज के दम्भ, अंधविश्वास, जड़ता, पुराने रीतिरिवाज आदि विषयों पर प्रहार व्यंग्यात्मक भाषा द्वारा किया जाता है । सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का मानना है-"व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है,जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है ।...जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है,जितनी गंभीर रचनाकार की बल्कि ज्यादा ही ।...अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है ।"[७६]

राजी सेठ की कहानियों की भाषा भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, थोथे आदर्शवाद व प्राणहीन रूढ़िगत संस्कारों पर व्यंग्य करती है । "जीवन की विसंगतियाँ,अत्याचारों व कुरीतियों, विषमताओं को सहज व्यंग्य के साथ उभारना राजी सेठ का सर्जनात्मक कौशल्य है ।"[७७] यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है...

'काया प्रवेश' कहानी में राजी सेठ ने डॉक्टरों की व्यावसायिक यांत्रिकता पर व्यंग्य कसा है-"दुःख-दर्द की पोटली,जो वह साथ लेकर आया था,सुदामा के चावलों की तरह बगल में ही कसमसाती रहेगी । स्टूल से उठने में वह कुछ आनाकानी करेगा । इधर-उधर देखेगा । पैने-दर्दीले शब्दों के गुच्छे जो वह अब तक मुहँ में चबुला रहा था,एक बेबस उतावली में डॉक्टर पर ढुलका देने का जुगाड करता दीखेगा;बिना यह समझे कि बड़े डॉक्टर के दिमाग का शटर धड़धड़ाता हुआ कब का गिर चुका है । तब तक दूसरा रोगी भीतर आ चुका होगा और डॉक्टर उधर उन्मुख हो चुके होंगे ।"[७८]

'यहीं तक' में राजीजी ने धर्म के ठेकेदारों द्वारा भोगे जाने वाले ऐश्वर्य का नमूना दिया है-"क्या बतायें बहिन ! फलों के मेवों के ढेर लगे रहते हैं | दूध, दही, शहद, घी के मटके भरे रहते हैं; पर भगत जी ?¨न ! न ! मजाल है आँख उठाकर भी देखें |"[७९]

भारतीय दांपत्य में नारी की प्रस्थिति को लेकर भी राजीजी ने व्यंग्य किये है | 'किस्सा बाबू बृजेश्वर जी का' कहानी में बृजेश्वरजी अपनी पत्नी को नाम बदलने की सलाह देता है, तब दबंग पत्नी तर्क करती है कि पति स्वयं अपना नाम कोई दूसरा क्यों नहीं रख लेता ? इस पर बृजेश्वरजी भड़क कर कहता है-"मैं ? तुम मुझे कह रही हो ? बृजेश्वरजी की आँखे फ़ैल गयी थी |...कभी सुना है तुमने ?...यहाँ ? हिन्दुस्तान में ?...अभी सालों लगेंगे तुम्हारे सपने पूरे होते |...तब तक तो तुम दो जन्म पा जाओगी |"[८०]बृजेश्वरजी की पत्नी का नाम सरिता से बृजरानी रखा जाता है | राजीजी ने इस कहानी में व्यंग्य किया है कि हमेशा स्त्री को ही पुरुषों के नियम के अनुरूप ढलना पड़ता है |

'घोड़ों से गधे' कहानी में आज के शिक्षित मध्यमवर्गीय परिवारों के परस्पर व्यवहार का वर्णन करते हुए व्यंग्य का नमूना द्रष्टव्य है-"थोड़ी ही देर में बेडरूम में से उनके जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं | सक्सेना साब का स्वर भी उत्तरोत्तर चढ़ता गया | पहले तो झगड़तीं,एक-दूसरे में उलझतीं आवाजें¨फिर धड़ाम से दरवाजा बन्द हो गया |"[८१]'अभी तो' कहानी में कॉन्वेंट स्कूल की सनक पर व्यंग्य है-"कॉन्वेंट में दौड़े जायेंगे लोग,क्योंकि प्रतिष्ठा का प्रश्न है | प्रतियोगिता का प्रश्न है | स्तरीयता का प्रश्न है | श्रेष्ठता का प्रश्न है | कितने सारे लाभों और लोभों के साथ ठोस होकर 'सुपीरियर ट्रेडीशन' बनाने का प्रश्न

है ।"[८२]

'लेखक गृह में लेखक' कहानी में लेखिका ने लेखकों की व्यवसायिकता पर व्यंग्य कसा है | आज लेखन भी रचनात्मकता का पर्याय न रह कर व्यवसायिक जरूरत बनता जा रहा है-"आपको मालूम है, मैंने दफ्तर से इस काम के लिए आधे साल की छुट्टी ले रखी है | अब इतना रोब-दाब तो हो ही गया कि इतनी सी बात पर कोई मुझे नंगा न करे | मेरा बॉस भी नहीं | क्रिएटिविटी का दबदबा ही कुछ ऐसा है ।"[८३]

लेखिका ने 'पासा' कहानी में समाज की व्यवस्था पर व्यंग्य किया है | हम यहीं कहते है कि हमारे देश को अंग्रेजों ने लूटा है | किन्तु आज सही मायने में देश को कौन लूट रहा है ? आज अपने ही अपनों को लूट रहे है | हर बेईमान इन्सान अपने से बड़े भ्रष्ट इन्सान की ओर इशारा करके मानो अपना पाप धो लेता है-"तुम अपना खोट छिपाने के लिए देश की बगल में घुस रहे हो | एक मुखौटा मिला हुआ है सबको; जब चाहो, जहाँ चाहो,लगा लो | तुलना में अपने को साधू सिद्ध करने के लिए..."[८४]

'तत-सम' उपन्यास में नारी के डर की कथा है जहाँ आश्रयहीन समझीजानेवाली विधवा के प्रति पूरा समाज भेड़िये की तरह लोलुप हैं | "नामों के आगे डिग्रियाँ और विशेषण | चेहरे पर गम्भीरता-शालीनता के मुखौटे | भीतर वही खदबदाती हुई भुक्खड़ लांपटता जो खंडित कुँआरेपन के एहसास के सामने कितनी जल्दी नंगी हो जाती है ।"[८५]यहाँ समाज में-"आधे तो भेड़िये ही होते हैं | अकेला देखते ही झपट पड़ते हैं ।"[८६]'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत दो में भारतीय पतियों की शासन वृत्ति पर करारा व्यंग्य मिलता है | नायक जब मार्था को काम कहता है, तब मार्था कहती है-"यह

इंडिया नहीं है कि बीवियाँ चाकरी करती रहें | तुम अपने काग़ज़-पत्र खुद सँभालो |"[८७]

भाषा में सांकेतिकता :-

साहित्यकार भाषा प्रयोग में स्पष्ट कथन और अभिधा के प्रयोग के स्थान पर जब शब्दों का व्यंजना पूर्ण प्रयोग करता है तो वहाँ भाषा की सांकेतिकता विद्यमान रहती हैं |

राजी सेठ की कथा सृष्टि में अनेक प्रसंग,पात्र व घटनायें संकेतों द्वारा अभिव्यक्ति पाते हैं | "राजी सेठ सघनता व संकेतात्मकता के लिए सुविख्यात है | कामसंबंधों के विभिन्न चित्रणों, आक्रोश के क्षणों एवं अलगाव के प्रसंगों को चित्रित करते हुए राजी सेठ ने अनुकूल संकेतों का सहज एवं संप्रेषणधर्मी विधान किया है |"[८८] राजी सेठ ने श्रृंगार वर्णन करते समय भी संकेतों से काम लिया है ताकि नग्नता का बोध न हो | यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है -

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी की रीनू अपने प्रेमी के साथ अकेले क्षणों में इस प्रकार चित्रित हुई है-"उस असावधान क्षण में मुझे लगा, अचानक किसी ने पीछे से आकर मुझे बाँहों में भींच लिया है और इतना भींचा है कि…उसने अपने होंठों से मेरे होंठ बंद कर दिये | एक कातर बेसुधी | …वह अनपढ़ आत्मा को शरीर का पहला एहसास था | एक तपती हुई पिघलन को हठात् मेरे गले उतारता हुआ वह…|"[८९]

'अपने विरुद्ध' कहानी में लेखन की वृत्तिवाली रूचि का लेखकत्व उसके पति द्वारा अवरुद्ध किया जा रहा है | जब रूचि अपने पति श्याम के सामने लेखन की बात करती है तो उसका विरोध इस प्रकार होता है-"कुछ बने इससे पहले ही श्याम की बाँहे

मुझे खींच लेती थीं वापस | फिर एक प्रकार के सुख से दूसरे प्रकार के सुख में यात्रा | पर मन एक प्रकार के सुख से स्तंभित हो तो दूसरा सुख,सुख नहीं लगता |”[९०]यहाँ देहसुख के द्वारा उस सुख को दबाने का संकेत है जो स्त्री के अस्तित्व को बड़ा बनाता है |

अंतरंग क्षणों में नर-नारी संबंधों का चित्रण करते हुए लेखिका ने प्राय: संकेतों से काम लिया है | पति प्रकाश अपनी पत्नी को यौनचार का संकेत इस प्रकार के आमंत्रणमूलक निर्देश के साथ देता है-“नाइटी पहनना जरुरी नहीं है क्या ? तुम इस वक्त अपने कमरे में हो, क्या यह भी बताना पड़ेगा तुम्हें ?”[९१]

स्त्री की शरीर रचना में मासिक धर्म की यंत्रणा को राजी सेठ ने अपनी कई कहानियों में संकेतात्मक भाषा द्वारा चित्रित किया है | “मन का उत्साह कभी मरने लगता तो वह तीस दिन के बाद आनेवाले सबसे वजनदार दिन की याद करती |”[९२]‘स्त्री’ कहानी का उदाहरण-“जिस दिन भागती-दौड़ती न दीखी, उस दिन से तीन दिन का हिसाब जोड़कर, मन पर ज़ब्त रख लेता है चुपचाप |”[९३]

लेखकों की पत्नीयाँ कितना खाली अनुभव करती हैं, इसका सांकेतिक चित्रण अवलोकनीय है-“जीवन भर वह मेरी पुस्तकों से भयाक्रांत रही है | मेरी मेज़ पर पड़ी एक छोटी-सी काग़ज़ की चिंदी भी उसके जैसी दबंग खुशमिज़ाज औरत का कलेजा दहला सकने में समर्थ रही है |”[९४]‘इन दिनों’ कहानी में एयर इंडिया में नौकरी करते बेटे के चोर कर्म का संकेत इस प्रकार किया गया है-“उन्होंने देखा उस सुंदर-से बैग पर से वह एयर इंडिया की काम्पलीमेंटरी चिट खुरच रहा है |”[९५]‘अकारण तो नहीं’ कहानी में यौन की अपूर्णता का चित्रण करने के लिए राजी सेठ ने संकेतों का प्रयोग किया है-

'अकेले में पहुँचते ही उसकी देह को संदेह का साँप सूँघ जाता है | जब मन ही पूरा नहीं बन पाता तो पौध कहाँ से होवेगी |...."[९६]

'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा को उसके परिवार वाले संकेतात्मक रूप से समझाने का प्रयास करते हैं कि समाज में विधवा स्त्री कितनी असुरक्षित है और अपने मन का क्या भरोसा की कब डगमगा जाए-"रास्ता रपटीला है | उम्र दहकी हुई | भूमि सींची नहीं जाती तो तड़क जाती है |....यह दुनिया भूखे भेड़ियों से भरी है-भूखे भेड़ियों से | अकेला देखते ही झपट पड़ते है | बोटी-बोटी नोंच भी लेते है और डकार भी नहीं लेते |"[९७]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत एक' में नीरा के बासू के प्रति बढ़ते रागात्मक संबंधों को विशाल इस प्रकार अनुभव करता है-"मैंने उस पर ज़्यादा ध्यान देना शुरू किया था, स्नेह के उलार को महीन तरीके से उस तक पहुँचाते | और कोई समय होता तो वह उस पुल का स्वागत करती | अब ऊबती थी | बँटी रहती थी | बात सुनती थी जैसे दहलीज पर खड़े खड़े | अपने मनोनीत प्रदेशों की ओर मुँह करके |"[९८]

राजी सेठ ने सांकेतिक भाषा के अतिरिक्त देह भाषा का प्रयोग भी किया है | साहित्य में किसी स्थिति या प्रसंग को भाषा या वाणी से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता तब ऐसी स्थितियों या प्रसंगों को आंगिक अभिनय द्वारा संप्रेषित किया जाता है | अनेक स्थितियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें कहा नहीं जा सकता,उसे केवल संप्रेषित किया जा सकता है | ऐसे में साहित्यकार नेत्रों की भाषा को अपनाता है | "नेत्रों की भाषा एक सशक्त, प्रभावोत्पादक एवं गूढ़ भाषा है | यही कारण है कि नेत्रों की दृष्टि अपने प्रसंग,प्रस्थिति एवं प्रभाव में अर्थ बदलती रहती है |"[९९] रीतिकालीन

कवि बिहारी के प्रेम व्यापारों में नैनों का अत्यधिक महत्व है | इसी वजह से बिहारी की नायिका इसी भाषा को महत्व देती है-

"कहत नटत रीझत,खिझत मिलत खिलत लजियात

भरें भौनु में करिहै नैननु ही सैं बात |"[१००]

राजी सेठ की कुछ कहानियों के पात्र अपने भावों को संप्रेषित करने के लिए नेत्रों की भाषा को अपनाते हुए दिखाई देते है | राजी सेठ ने 'अमूर्त कुछ' कहानी के सुम्मि और कप्पी के प्रेम को नेत्रों से अभिव्यक्त करवाया है -"और कप्पी दरवाज़े में खड़ा था, निश्चल, आत्मविस्मृत, एकटक उसे देखता हुआ |"[१०१] 'अस्तित्व से बड़ा' कहानी का एक उदाहरण -"एक बार फिर मुझे उस निगल लेने वाले व्यग्र दृष्टि का सामना करना पड़ा था |"[१०२]

'एक यात्रांत' कहानी में पति के प्रेम से वंचित पत्नी अपने पति के आँखों में प्यार तलाश रही है- "मेरे भीतर की कोई उद्दंड अपेक्षा तुम्हारी फिसलती आँखे टटोल रही थीं | तुम्हारी उड़ान भरी देह पर नये सपने रचती आँखें तो थीं पर उनमें परिचित कुछ न था |"[१०३]

'अनावृत कौन' कहानी की नवविवाहिता अपने पति प्रकाश से रूठ कर मायके चली जाती है | वहाँ उसे ऐसा लगता है कि माँ की आँखें उसे पढ़ रही है-"माँ उस समय गंभीर नहीं थीं,फिर भी उन्होंने बहुत गहरी आँखों से मुझे भीतर तक देखा |"[१०४]'यात्रा-मुक्त'कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है-"बापू ने अपनी आँख की कठोर वर्जना से उसे वहीं....उस दहलीज के पास ही खड़े-खड़े सुन्न कर दिया |"[१०५]'बुत' कहानी की पत्नी की आँखें भावशून्य होती हुई दिखाई देती है-"आँखे देख रही थीं, पर लग रहा था देख नहीं रही हैं |"[१०६]'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत एक का बासू नीरा की आँखों

में डूब चुका है | उसकी दृष्टि नीरा के चेहरे पर जा टिकती है "आँखों की राह उसके समूचेपन में प्रविष्ट होकर | उसे आमूल उद्वेलित करके |"[१०७]

उपमाओं का प्रयोग :-

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में युग व सदर्भों की क्लिष्टता व रहस्यात्मकता को खोलने के लिए अथवा अभिव्यक्त करने के लिए उपमाओं का प्रयोग किया है | ये उपमाएँ कहीं चरित्र निर्धारित करती हैं,कहीं पात्रों की मानसिकता को उद्घाटित करती हैं | यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये है -

'अमूर्त कुछ' कहानी में कप्पी के मृत्यु के बाद प्रेमिका सुम्मि को गहरा आघात लगता है | उसका दुःख व्यक्त करती भाषा इस प्रकार है-"श्मशान का-सा सन्नाटा मुख पर लिखा, जलविहीन ताल में निष्प्राण अटक जानेवाली मछलियों की-सी पुतलियां...|"[१०८]'पुन:वही' कहानी के देवव्रत को अपने पिता के देहांत के बाद आघात लगता है | रोते-रोते "मोटी-मोटी गूलर की-सी सूजी आँखे पूरी तरह जलविहीन हैं |"[१०९]'अन्तहीन' कहानी के स्टेशन मास्टर के मुख को मोमबत्ती की उपमा दि है-"पिघलने को पहुँचती हुई मोमबत्ती का-सा मुझे लगा था उनका मुख |"[११०]

'खेल' कहानी में ओम नामक रोगी मरणासन्न है | उसकी गड़बड़ाती साँसे पूरे वातावरण में एक तनावभरी तड़पड़ाहट फेंक रही है जैसे कोई मछली को पानी से बाहर फेंकता है | उसे देखकर जो अनुभूति होती है वह इस प्रकार चित्रित की गयी है-"चिथड़े-सा लावारिस कुछ मेरे भीतर फडफडाया था |"[१११]'उन दोनों के बीच' कहानी के गृहस्वामी के लिए प्रयुक्त उपमा की सार्थकता देखें-"रेत की तरह कहीं भी चमकते पड़े रहें,भिड़ जायें तो ईट बन जायें |"[११२]

'तदुपरांत' कहानी की पत्नी पति की मृत्यु के उपरांत स्वयं को निराश्रित सी अनुभव करती रहती है | उसका मन कहीं भी नहीं लगता | उसका ध्यान"गली के कुत्ते-सा इधर-उधर मंडराता रहता है |"[११३]'दूसरे देशकाल में'कहानी की नायिका का चेहरा गर्भपात के बाद कैसा हो गया है-"चेहरा ऐसा धुआं-धुआं जैसे भाप की दीवार के पीछे का दर्पण |"[११४]

उपमाओं का प्रयोग करते समय लेखिका ने दृश्यात्मक स्थितियों को अधिक वरीयता दी है | उनकी उपमाएं व्यक्ति के भीतर तथा बाहरी संसार की संपूर्ण अभिव्यक्ति देने में कारगर सिद्ध होती हैं | 'पुल'कहानी में वीराँ के बेटे बाबले का एक्सीडेंट हुआ था | बाबले का एक्सीडेंट जिस चौराहे पर हुआ था उसी चिराग चौराहे पर पुल बनने की बात सुनकर वीराँ की प्रतिक्रिया-"तो ? आवाज ऐसी निकली जैसे नोकीले पत्थर का तत्पर दाँत |"[११५]'बाहरी लोग' कहानी की विधवा बुढ़िया का चित्रण द्रष्टव्य है, "दरवाजा खोलते ही रोशनी की उस फाँक में एक गुड़ीमुड़ी गठरी-सी खाट पर रखी मुझे दीखी |"[११६]

'तत-सम' उपन्यास में भी उपमाओं का प्रयोग दिखायी देता है | जैसे "जिनके नाटक निपट गये हैं,वह पक्षियों की तरह विचरण कर रहे हैं |"[११७] वसुधा की नियति को राजी सेठ ने इस तरह उपमित किया है-"नियति के पेड़ से अधपके फल की तरह टूटी वसुधा...|"[११८]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत एक' में विशाल को बासू की बातें विचित्र लगा करती हैं-"कुम्हार के सामने पड़ी मुट्ठी के लोंदे जैसी | उनको ऐसा ही रहना था,जब तक आंवे न चढें |"[११९]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' में नायक के अमेरिका

चले जाने पर यहाँ के लोगों को जैसे उसकी आवश्यकता ही नहीं रही | सभी उसके बिना जीना सीख गये हैं | वात्सल्य भाव की भूख तो केवल माँ में बची है और सब सदस्यों के लिए तो "संबंध कपड़ो की तरह सूखकर अलमारियों में पहुँच गये |"[१२०]

सूक्तवाक्य एवं सूत्र वाक्य का प्रयोग :-

'सूक्ति' शब्द अंग्रेजी के 'एकोरिज्म' के समानार्थक हैं जिनका प्रयोग कथोपकथन तथा योजना में तार्किकता, प्रामाणिकता, सत्यप्रतिष्ठा व प्रभावान्विति के लिए किया जाता है | आज के व्यस्तपूर्ण युग में आदमी नवीन प्रयोगों से अल्प समय में 'बहुत कुछ' प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है इसीलिए साहित्य में भी लघुमानव, लघुक्षण अनुभव, लघुसत्य की प्रतिष्ठापन होती जा रही है | सूक्तियाँ इसी 'लघुअनुभव' की अभिव्यक्ति का साधन है |

राजी सेठ ने स्थितियों का आशु संकेत देने के लिए सूक्तियों और कथ्य की गहनता को संकेतित करने के लिए सूत्र वाक्यों का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग किया है |

यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है -

'पुन:वही' कहानी में बाबूजी की मृत्यु के उपरांत दुःख की मारक शक्ति का चित्रण करती सूक्ति-

"और बेला ? माँगे बिना तो माँ भी दूध नहीं देती |"[१२१]यह सूक्त वाक्य बेला के संदर्भ में कहा गया है | 'किसके पक्ष में' कहानी में बेला और विक्की के संबंधों के बिगड़ जाने पर जयंत बेला के विषय में यह सूक्त वाक्य कहता है |

'तत-सम' उपन्यास का एक सूक्त वाक्य वसुधा के अच्छे अतीत का स्मरण कराता है, "अच्छी चीज़ हर हालात में अच्छी रहती है |"[१२२]

'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा विवेक को जीवन प्रवाह में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हुए कहती है-"जीवन की पुकार चाहे कितनी भी कमज़ोर क्यों न हो, मृत्यु के पूरे हाहाकार से अधिक समर्थ है...अधिक आमंत्रक... |"[१२३]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' की सूक्ति-

"रिश्ते रिश्ते नहीं बाँहें होती हैं |"[१२४]यह वाक्य वसीम के संदर्भ में आताहै लेकिन लक्ष्य तो नायक है | नायक अपनी भूमि, परिवार और संस्कारों की उपेक्षा करता है | यही उपेक्षा उसके व्यथा का कारण बनती है |

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रयुक्त सूत्र वाक्य प्रस्तुत है:-

"वह अधिक स्त्री होना चाहती है, इसलिए पुरुष को अधिक देखना चाहती वह |"[१२५]दबंग प्रवृत्ति की बेला अपने पति को छोड़कर किसी सामर्थ्यवान व्यक्ति को पति के रूप में पाना चाहती है |

"बदलने के लिए हिम्मत चाहिए जो मैं तुममें पैदा नहीं कर सकती |"[१२६]यह सूत्रवाक्य 'तीसरी हथेली' कहानी का है | 'तीसरी हथेली' कहानी के नंदिता का प्रेमी विवाहित है | अपने परिवार, बच्चे और पत्नी को छोड़कर नंदिता के अनुरूप होने का सामर्थ्य उसमें नहीं है |

अन्य सूत्र वाक्यों के उदाहरण द्रष्टव्य है-

"जितना आराम यहाँ मिल गया, मिल गया, बाहर तो धक्के-ही-धक्के है |"[१२७]

"ज़रूरी से कम ज़रुरी होते-होते सुरजीत गैर-जरुरी हो गया था |"[१२८]

"अपना अस्तित्व अपना होता है |"[129]

"सब सोचा हुआ तो नहीं होता |"[130]

"अँधेरे की अभ्यस्त आँखों को चुभ रहा है धुपधुला आकाश |"[131]

"मुक्ति अपनी अकेली किसी की नहीं होती |"[132]

समांतरमूलक प्रयोग :-

राजी सेठ के कुछ कथानकों में वाक्यों की आवृत्ति के कारण सार्थक समांतरता मिलती है जो कथ्य के गहन व आंतरिक पक्षों को पाठक के सामने उजागर करती है | यहाँ उदाहरण द्रष्टव्य है- 'समांतर चलते हुए' कहानी का नमूना द्रष्टव्य है-

"तुम्हारे होने से मैं अत्यंत सुरक्षित महसूस करती हूँ |"[133]

"तुम्हारे होने से मैं अपने आप को बहुत सुरक्षित महसूस करती हूँ |"[134]

यहाँ एक वाक्य की आवृत्ति कहानी के कथ्य से जोड़ती है | 'अंधे मोड से आगे' कहानी में भी वाक्य की आवृत्ति दिखायी देती है :

"यह सब वह यदि सुरजीत के लिए ही करती रहती |"[135]

'अपने दायरे' कहानी पत्नी का दांपत्य जीवन संतप्त एवं संत्रस्त है | वह ऐसे दांपत्य से मौत को बेहतर समझती है:

"चिता की राख के साथ भस्मीभूत हो जायेगा |"[137]

यही वाक्य माँ की डायरी पढ़नेवाला पुत्र पुन: कुछ अंतराल पर स्मरण करता है :

"चिता की लपटों के साथ भस्मीभूत हो जाएगा |"[138]

'निष्कवच' के 'वृत्तांत दो' में वसीम नायक को फोन पर कहता है :

"मैं समझ सकता हूँ | तुम्हारी जिंदगी मेरे सामने है |"[139]

नायक घर आते समय उसी वाक्य को सोचता है :

"तुम्हारी जिंदगी मेरे सामने हैं |"[140]

लेखिम स्तरीय प्रयोग :-

राजी सेठ ने लेखिम स्तरीय प्रयोग किया है | उन्होंने बिंदुक का प्रयोग अधिकतम किया है | "ये प्रयोग कहीं तो अमर्यादित कथन को अनुमेय छोड़ देने के लिए हैं तो कहीं अश्लील या कामाचार की स्थितियों के नग्नचित्रण से बचने के लिए हुए है |"[१४१]इसके अतिरिक्त निराशा,अवसाद,विरोध,अपमान आदि स्थितियों में भी बिंदुक प्रयोग हुए है | यहाँ उदाहरण द्रष्टव्य है-

"वह क्यों चाहते हैं कि लाडी देखे...पूछे...जिज्ञासा करे...ध्यान दे कि वह क्या है जो इस घर में एकदम नया है...विशेष...क्यों और किसलिए लाया गया है !"[१४२]

"क्यों मान लेंगे मुर्दा...अपने मित्र...आत्मीय...यह बात निशा भाभी की समझ से बाहर है |"[१४३]

"मालकिन ने कहा था- तरुण बाबू ने ग़लत किया है...तुम्हें मारा है... वह मुर्ख है, अल्हड़ है...ठीक हो जायेगा...न हो जायेगा तो सब तुम्हारे बापू की तरह किस्मत वाले तो नहीं होते...तू सयाना है, समझदार है किशना...भूल जा |"[१४४]

"मन बुरा न करो |...यह सब भी तो तुम्हारा लाया हुआ है...पूजा में वह पैसे खर्च करना ठीक नहीं था...भगवान का काम है...|"[१४५]

"क्यों...क्या आफत आयी थी ?...आसमान टूटा पड़ रहा था ?...चलो सीधे...अपने घर |"[१४६]

'बुर्जियों की छाँह तक' कहानी में अनेक संवाद केवल बिंदुक में है जैसे "..............."[१४]

"लगा था वही बड़ी है...वही दृष्टिवान...उद्‌गारों से भरे हम दो मुर्ख मित्रों से अधिक परिपक्व...इस संसार के गणित ज्ञान में पूर्ण

पारंगत….|”[१४८]

ध्वनि पर आधारित समांतरता:-

राजी सेठ के कई गद्य स्थल काव्य प्रयोगों की तरह समांतरित ध्वनी की सर्जना करते हैं जैसे-

“लोग आते हैं | जाते हैं | नापते हैं | तोलते हैं | कौचते हैं | लहूलुहान करते हैं |”[१४९]

“घुमायेगा, फिरायेगा, खिलायेगा, पिलायेगा |”[१५०]

“फिर तैयार कपड़ो की दुकान | फिर स्टेशनरी | फिर भाँडे-बर्तन |

फिर दर्जी | फिर फोटोकॉपी का काँचवाला केबिन |”[१५१]

“एक हुसैन | एक पिकासो | एक छोटा टी.वी |”[१५२]

“माँ, मैं और कमली |
आँगन, क्यारियाँ और श्यामली |
कुर्सी, पाटला और कनस्तर |
चावल, चिड़िया और परात |”[१५३]

विचलनमूलक प्रयोग :-

सामान्यतया हिंदी में वाक्य संरचना कर्ता + कर्म + क्रिया वाली होती है, लेकिन जब इस प्रकार की संरचना का व्यतिक्रम एवं शब्दों के सुपरिचित क्रम विधान का उल्लघंन मिलता है, तो वहाँ विचलन होता है | अर्थात, भाषा के नियमित प्रयोग से भिन्न प्रयोग ही विचलन है | सर्जनात्मक भाषा में लेखक कई बार भाषिक सौंदर्य अथवा प्रभावान्विति के लिए मानक से विचलित प्रयोग करता है | विचलित के संदर्भ में विद्यानिवास मिश्र मानते हैं-“जिसे गद्य की दृष्टि से मानक रूप से विचलन कहा जायेगा, वह काव्य भाषा के गठन की दृष्टि से भाषा की सर्जन क्षमता का प्रमाण बन

जाता है, बशर्ते कि उसका उपयोग संयम औरकौशल से किया जायेगा |"[१५४]

राजी सेठ की कथा सृष्टि में निम्नलिखित दो प्रकार का विचलन अधिक पाया गया है:

शब्द स्तरीय विचलन

वाक्य स्तरीय विचलन

शब्द स्तरीय विचलन :-

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में मानक भाषा में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों को नये रूप में अधिग्रहण किया है | जैसे: स्पर्शा (स्पर्श किया), स्पर्शाते (स्पर्श करते), उष्णति(उष्णता देते), उजालने(उजाला देने), खलबलाने(खलबली मचा देने), अलगाने (अलग करने), लंबाते(लंबा करते हुए), गंधाती(गंध छोड़ती हुई), हवसायें(हवस द्वारा प्रेरित) |

राजी सेठ ने इन मानक शब्दों का प्रयोग विकृत परंतु सार्थक रूप में किया है |

वाक्यस्तरीय विचलन :-

राजी सेठ के कथा साहित्य में व्याकरणिकता तथा स्वीकार्यता का अतिक्रमण अनेक वाक्यों में होता है | ऐसा उन्होंने काव्यात्मक, नाटकीय व सौंदर्यात्मक कथन के उद्देश्य से किया है |

उनके साहित्य में क्रमभंगपरक वाक्य विचलन बहुत अधिक मिलता है | कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

"पोस्टिंग उसकी हुई थी मोदीनगर |"[१५५]

"कहाँ थीं अभी तक तुम |"[१५६]

"कितने बच्चे हैं आपके ?"[१५७]

"गजलों का संग्रह बेजोड़ है शरत के पास |"[१५८]

"तैयार होकर आयी है तो सहम गई हैं भाभी |"[१५९]

"मुटठी खोल सकती है मार्था |"[१६०]

"आजकल क्या हो रहा है घर में ?"[१६१]

"ख़ूब ख़ूब सुगम लगा था बासू को देख पाना |"[१६२]

शब्दप्रयोग :-

आज हिंदी में विभिन्न भाषाओं का बड़ी मात्रा में प्रयोग किया जा रहा है | अपने अन्दर के भावों, विचारों को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करने के लिए लेखक प्रांतीय भाषाओं के शब्दों के अतिरिक्त स्थानीय बोलियों एवं विभाषाओं के शब्दों को भी अपना रहे हैं | राजी सेठ ने शब्दप्रयोग की दृष्टि से स्थिति, व्यक्ति, परिवेश, पद, संस्कृति आदि को लक्षित करके उर्दू, फारसी शब्द, पंजाबी शब्द, देशज शब्द, अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया है | यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

उर्दू- फारसी शब्द :-

मर्दानगी, मासूमियत, ख्वाहमख्वाह, दोस्ताना,आजमा, गर्क, आबरुदार, रूतबा, दीदार, मोहतरमा, गोरखधंधा, इंतजार, हवस, तालीम, मजहब, औरत, क्रब, गोश्त,नामुराद, तकाजा, तहेदिल, तशरीफ, फरमाया, खुमार, ख़ारिज, सेहरा, इबारत मर्दानगी, मोहतरमा आदि |

पंजाबी शब्द :-

गुझा, चुप्पा, गवाचा, खिलदंडा, न्यानों, गद्दर, पलेयन, तडका, जुगाली, रड़क, धुमेरियां, फुलके, कुडियां आदि |

देशज शब्द :-

लौंडा, भोंदू, बुक्का, टेव, पौंडते, बरनी, पोंजे, अगुआ, कीच, लिथडता, गरमाई, बावरी, रोते-झीकते, दूभर, आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

कांस्टेट,पेंटिंग, बूट, पर्सनेलिटी, एग्रोसिव, पेरेट्स विंडचीटर, वैल्यूज, सिचुएशन, अपार्टमेंट, ट्यूटोरियल, इनोसेंट, रजिस्ट्रेशन, अबार्शन, डार्करूम, रिसर्च, टिपिकल, यूनीवर्सिटी, प्रपोज, इमरजेंसी, लायब्रेरी, लेटरपेड, ट्रांसफर, वीकएंड,यू इंडियन आदि |

मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग :-

भाषा की संरचना में मुहावरों के प्रयोग द्वारा अर्थमूलक चमत्कार आता है | संदर्भानुकूल मुहावरों का चयन भाषा शैली की विशिष्टता का लक्षण है| यह भाषा की सरलता और सजीवता बढ़ाने में सहायक है | मुहावरों में विशद् चित्रात्मक तथा प्रभावशाली अर्थ की सत्ता होती है | मुहावरों में अमूर्तता की अपेक्षा मूर्तता,तर्क की अपेक्षा शक्ति, व्याकरणिक़ व्यवस्था की अपेक्षा सामासिकता की प्रधानता होती है | उनमें प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने की और उत्तेजित करने की शक्ति होती है | मुहावरे भाषा की यौवन शक्ति और समर्धता के प्रतिक है |

राजी सेठ ने अपनी भाषा को समृध्द बनाने के लिए मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग यथासंभव किया है | ये मुहावरें एवं कहावतें राजी सेठ के देशकाल और अपने परिवेश के जुड़ाव को दर्शाते हैं | यहाँ राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रयुक्त कुछ मुहावरें और कहावतें प्रस्तुत है | जैसे: आस्तीने चढ़ाना, आग बबूला होना, दाँत पीसना, होठ फड़फड़ाना, गले की डाट खुलना, संदेह की सूली पर टंगना,घोंट-पीसकर पी जाना, ढुलका लेना, साँप सुंघ जाना,कानों में तेल डाले,नाक में नकेल डाले,खरखरी खाट,चुस्त आनंद देनेवाला कोलाहल,गुम हुए रहना,दखल देना, युद्ध और बुद्ध फटते देर नहीं लगती, नदी किनारे रुक्खड़ा अज्ज डिग्गा कि कल, औरत पेट के

माध्यम से मन में घुसती है, उस सभ्यता के कलगीदार फैसले, दोस्त के साथ रिश्ता नंगघडंग, बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना, हाथ कंगन को आरसी क्या,गूँगे के गुड़ के स्वाद की तरह आदि | डॉ.गोविन्दचन्द्र पाण्डेय अपने एक साक्षात्कार में कहते है-"प्रचलित मुहावरों में लिखना कोई बड़ी बात नहीं,एक कवि या सर्जक तो अपने मुहावरे तो स्वयं बनाता है | राजी की भाषा में ऐसे अनेक मुहावरे तैरते हैं जिन्हें कथा अपने अंदर खींच कर उनसे गहन अर्थ की निष्पत्ति करती है |"[१६३]

लोकभाषा का प्रयोग :-

लोकभाषा किसी अंचल विशेष में बोली जाने वाली ग्राम्य भाषा है | इस भाषा का प्रयोग मूलत: कथावस्तु और पात्र योजना अर्थात पात्रों के माध्यम से लेखक अपनी रचना में अनुबन्धित रहता है |

राजी सेठ ने कुछ जगह पर पात्रों की सत्यता को स्पष्ट करने के लिए लोकभाषा का प्रयोग किया है | 'उसका आकाश' कहानी में लोकभाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है | 'उसका आकाश' कहानी का नौकर देवकी की भाषा में लोकभाषा की झलक दिखाई देती है-"जी मालिक ! पिरथी बाबू को छोरो अमेरिका सो आवत रहा | दुई मंज़िल चड़ाहा चाहता है...काफी हुई गवा मालिक ! मसीन सों करत रहिन,सीमेंट मिलावत है | आवाज़ आवत रही न मालिक !...निच्चेवाला तय्यार हुवा चाहत है..."[१६४]

'यात्रा-मुक्त' कहानी का उदाहरण प्रस्तुत है-"बापू उन्हें देखते ही आग बबूला हो जाते, चैन नहीं पड़ती उहां आ जाते है खाने हियां क्या खाना धरा है ? खाकर आये होते | यह सब सुनना उसे गड़ता ! तुरंत कह देना चाहता घर से खाकर चले होने

की बात, पर पास घूँघट में बैठी माँ चुटकी काटकर उसे बरज देती | बाद में बताती कि खाने के बहाने कुछ तो बैठेंगे | बापू बगलें झाँकते मालकिन को खबर करते, झेंपे हुए से | एक पैर दहलीज के बाहर एक भीतर, "वो-वो आये हैं | चले आते हैं हियां मरने | हियां क्या खाना धरा है ?"[१६५]

'स्त्री' कहानी का उदाहरण द्रष्टव्य है-"रीधेंगी-पकायेगी,धोयेगी-सँवारेगी, कूटेगी-पीसेगी, खिलायेगी-पिलायेगी, टहल सेवा करेगी पर कभी इत्ता भी नहीं जान पायेगी कि सबके मन में क्या-क्या है | नक्कारी जो हुई | चूल्हे से लगी लकड़ी की लपट के सुभाव को ही जाननेवाली मानी जाती रही |...न किसी बात का बखत न होशियारी | इत्ता-सा भी बखत न मिले...तिस पर ऐसी टाय-टाय हड़बड़ी |"[१६६]

'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' में लोकभाषा का प्रयोग दिखायी देता है | 'दूसरे वृत्तांत' का नायक जब अपने गाँव में घुमने निकलता है, तब वहाँ उसे पानवाला लाला पहचान लेता है | वह अपनी भाषा में कहता है-"अरे वाह भैय्याजी ! बहुत दिनन मा दीखे | कहाँ रहे इत्ते दिन ?" अमरीका में रहता हूँ | उहाँ तो बड़ी-मौज-मस्ती सुनी है ? और पैसा-धेला भी खूबई खूब | हमारा लौंडा तो कतई जाय नई सकत है |"[१६७]

नवीन व मौलिक प्रयोग :-

मन की विभिन्न स्थितियों को व्यक्त करने के लिए, चरित्र निर्धारण के लिए सर्जक कई प्रकार के नवीन प्रयोग करते हैं | राजी सेठ ने भी कई नये प्रयोग किये है |

राजी सेठ अप्रस्तुत विधान का प्रयोग बहुतायत करती है | आंतरिक जगत की अभिव्यक्ति को अप्रस्तुत विधान के प्रयोग

द्वारा अधिकाधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए वे मौलिक प्रयोग करती है | कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

"रंगों में बहता गरम लावा पानी की तासीर ले लेता है, और अपने से अपना रिश्ता दो-टूक हो जाता है |"[१६८]

"वह कितनी सदियों से उसके पौरुष की पीप को ले रही है- अपने भीतर..."[१६९]

"उसकी बाँहों पर चिपका हुआ कोई झुर्रीदार अतीत नहीं है |"[१७०]

"आंगन में खुले में सिर के ऊपर आकाश का टुकड़ा बंदी है |"[१७१]

"एक छोटी-सी बूंद जैसे जामन की |"[१७२]

"व्यस्तता चाट जाती होगी निकटता |"[१७३]

शैली :-

कथाकार जिस प्रकार से अपने विचारों एवं भावों को उपन्यास एवं कहानी में प्रकट करता है,उसी को शैली कहते है अथवा लेखक के भावों की अभिव्यक्ति का नाम ही शैली है | शैली को व्यक्तित्व का प्रतिरूप माना गया है | अपनी पृथक शैली के द्वारा ही लेखक का व्यक्तित्व अपनी पहचान कायम करता है | कथाकार अपने विचार व्यक्त करने के लिए शैली का प्रयोग करता है लेकिन शैली का संबंध विचारों या अनुभूतियों की मात्र अभिव्यक्ति से ही नहीं है, बल्कि विषयवस्तु की प्रभावपूर्ण तथा औचित्यपूर्ण अभिव्यक्ति, विषय एवं व्यक्तित्व प्रेरित वैशिष्टयों से युक्त अभिव्यक्ति से है | कथा साहित्य की लोकप्रियता बहुतांशी शैली पर निर्भर करती है | डॉ.नीरजा का कथन है-"शैली तो प्रस्तुति का ढंग है और शिल्प पूरी रचना की साकारता का तंत्रात्मक आधार | शिल्प की रचना जिस प्रक्रिया विशेष में से उभरती है वह है शैली |"[१७४]शैली कथा साहित्य का महत्त्वपूर्ण तथ्य है | कथाकार शैली के

माध्यम से ही अपने विचार, अपनी अनुभूतियाँ पाठकों तक पहुँचाता है | कथाकार शैली के द्वारा ही उपन्यास एवं कहानी में आकर्षण पैदा करता है |

शैली की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए डॉ.रामलखन शुक्ल लिखते है,"प्रत्येक प्रकार की कल्पना प्रधान रचना में शैली का विशेष महत्त्व होता है | मूलतः शैली ही एक ऐसा तत्व है जो रचनाकार के वैशिष्ट्य का उद्घोष करता है | विषय-वस्तु को जिन प्रणालियों में से तथा जिन साधनों में से प्रस्तुत करने का प्रयत्न होता है, उन सब का समावेश शैली तत्व में ही हो जाता है |"[१७५]शैली की दृष्टि से राजी सेठ ने कई प्रकार के प्रयोग किये हैं | उनके कथा साहित्य में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, चेतनाप्रवाह शैली, पत्रात्मक शैली और संवादात्मक शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है |

वर्णनात्मक शैली :-

वर्णनात्मक शैली सर्वाधिक प्रचलित और सुविधाजनक होती है | हिंदी कथा साहित्य में प्राय: वर्णनात्मक शैली का ज़्यादा प्रयोग होता आया है | शायद इसलिए कि कथानक के स्थान, काल तथा वातावरण का निर्माण करने की संभावना कलासृजन के लिए दूसरे तत्व में ज़्यादा न रहती हो | प्रसिद्ध मनोविश्लेषणकर्त्ता डॉ. धनराज मानधाने शब्दों में,"कथानक को आराम देने, उसमें वास्तविकता तथा विश्वसनीयता लाने और चरित्र-चित्रण के अस्पष्ट पहलुओं को उभारने में वर्णन बड़ा महत्त्वपूर्ण रोल अदा करता है | वर्णन सामान्य भी हो सकता है और सांकेतिक भी, विवरणात्मक भी हो सकता है और प्रभावात्मक भी |"[१७६]

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य में कथन के साथ-साथ चित्रण में पात्रों के चरित्रांकन, पात्रों की विचारधारा को उजागर करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है | उदाहरण दृष्टव्य है- "क्लर्की से कुछ बनता नहीं था | बीमार माँ, एक बहन, एक भाई और तीन बच्चे¨बहन जैसे-तैसे ब्याह गयी थी¨भाई होशियार था, अपने पाये वज़ीफे से पढ़ रहा था¨कभी-कभार आता था और बड़े भाई के कंधे पर एक नपुंसक दिलासा छोड़ जाता था |"[१७७]

"पलंग की गोलाई को पार करती वह मेरे दायीं ओर आई थीं | पानी उंडेला | सहारा दिया | पानी पिलाया पर वापस स्टूल पर बैठने की बजाय फिर खिड़की की ओर चली गई | क्या....क्या था वहाँ बाहर जो उनके पूरे अंतर को समेट सकने में समर्थ था |"[१७८]

'वर्णनात्मक शैली का प्रयोग स्थूल दृश्यों के वर्णन तथा विभिन्न पदार्थो के वर्णन में भी होता है | राजी सेठ के 'तत-सम' उपन्यास का उदाहरण प्रस्तुत है | कन्याकुमारी जाते समय रास्ते का दृश्य का वर्णन-"नारियल के गाछ | दूर- सुदूर तक धान का हरा फैलाव | कदली के स्तंभ | लाल रंग की मिट्टी | शरीर के मात्र मध्य भाग को ढकते दीखते पुरुष | नंगे पाँव | एक अचेत सादगी | नृत्यांगनाओं के से नख-शिख | चेहरों पर पूजा-प्रबल भाव | फूलों की वेणियाँ | नारियल की जटाओं के झोंपड़ |"[१७९]

'निष्कवच' उपन्यास के दूसरे वृत्तांत का उदाहरण-"सरहद के पार कोई एक भूखण्ड है | रास्ता आकाश को चीरकर जाता है | सात समन्दर पार का फासला है | सबकुछ अनदेखा है | भरकम आड़ है | बेगाने लोग है | पैसे प्रमुख है | अपनी तहजीब के विरुद्ध चाल-चलन है | लालच फिसलन है | निष्ठा खोखली है |

झपटा-झपटी है |"[१८०]

आत्मकथात्मक शैली :-

आत्मकथात्मक शैली का तात्पर्य यह है कि कथागत अन्तर्वस्तु प्रथम पुरुष में प्रस्तुत की जाए | उक्त शैली में लिखे जानेवाले उपन्यासों व कहानियों में लेखक अपने बारे में कुछ न कुछ कहता है | इसके अंतर्गत व्यक्ति का आत्मा-विश्लेषण किया जाता है | इसमें चरित्र पर जोर दिया जाता है | लेखक के अपने विचार अनुभव या पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जाता है | 'मैं' शैली में रचित कथा साहित्य के शैली में ओज तथा प्रवाह पाया जाता है | इस शैली में लिखे गये कथा साहित्य में लेखक खुद निवेदक होता है तो कभी नायक कथा कहता है और उसके इर्द-गिर्द कथानक की सारी घटनायें घूमती हैं | कुछ कथानकों में अलग-अलग पात्र अलग-अलग परिच्छेदों में अपनी कथा कहते हैं |

राजी सेठ ने 'खेल', 'आमने सामने', 'अनावृत कौन', 'नगर रसायन', 'सहकर्मी', 'डोर', आदि अनेक रचना कृतियों में इस शैली का सफल प्रयोग किया है | यहाँ कुछ उदाहरण दृष्टव्य है-

"मैं डर गयी थी | जितनी-सी उसकी पकड में थी वह भी नहीं रही | उसके चाहे बिना मैं पीछे लौट आयी थी,जहाँ से इसप्रकार के डर का बीजारोपण हुआ था-मेरे पूरी-की-पूरी उसके साथ न होने का एहसास और लावा उगलती उसकी खीज |"[१८१]

"मैंने ग़ौर किया था | पिछली कुछ शामों को स्मृति में लौटाने का यत्न किया था | नहीं,यह मेरा भ्रम नहीं था | वह सावधान था | अपने गिलास में वह कुछ कम शराब डालता था और देर तक उसे ही लेकर बैठा रहता था | मैं उज्र करूं तो वह अपने उसी अधूरे गिलास में थोड़ी और ढुलका लेता था |"[१८२]

"मैं भूल गयी थी कि वह कुछ पूछता दरवाज़े पर खड़ा है | मैं किसी दूसरी यात्रा के दौर में थी जो उससे लगकर शुरू तो हुई थी पर उसमें उसके लिए कुछ नहीं थी |"[१८३]

"मैं अपनी बात नहीं कर रहा,कहना मुझे व्यर्थ लगा | मैं आगे को टहल आया | लड़के के कूकने की आवाज वहाँ तक भी पहुँच रही थी | एक कँपकँपी उसके पैरों को ठण्डे लोहे से बजाती और उसकी चोटीली बाँह को बार-बार दर्द की पड़प में लपेट रही थी |"[१८४]

'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत दो में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग दिखायी देता है | इसमें तो पूरी कथा नायक ही कहता है |

स्मृतिपरक शैली (फ्लैशबैक पद्धति):-

स्मृतिपरक शैली से अभिप्राय-वर्तमान में जीते हुए पूर्व घटनाओं, स्थितियों व प्रसंगों का उस व्यक्ति के मानस पटल में अकस्मात कौंध उठना | इस शैली द्वारा एक ही घटना पर पात्र विशेष के दोहरे मनोभावों का प्रभाव सरलता से दिखाया जा सकता है | अतीत के स्मृत्यावलोकन से और वर्तमान स्थिति के विवेचन से पात्रों की दुविधाग्रस्त मन:स्थितियों का अकंन किया जाता है | अतीत में जीता हुआ पात्र न केवल उन भावनाओं और विचारों का विश्लेषण करता चलता है जिनका तत्काल सम्बन्ध परिस्थिति से था बल्कि उस भावना का भी आरोप करता है, जिसका उस परिस्थिति को पुन: सोचते हुए होना स्वाभाविक है | कथा साहित्य में इस शैली का प्रयोग दो प्रकार से होता है | एक तो वहाँ जहाँ कथा के प्रारंभ में ही इसे उपस्थित किया जाता है, दूसरा उपन्यास के यत्र-तत्र प्रभावान्विती हेतु |

राजी सेठ ने घटनाओं की वर्णनात्मक से उदभूत एकरसता,

जड़ता व नीरसता को तोड़ने के उपक्रम में इस शैली का प्रयोग कई स्थानों पर किया है | उनकी 'समान्तर चलते हुए','अमूर्त कुछ' 'अस्तित्व से बड़ा''एक यात्रांत'अन्तहीन','अभी तो',आदि कहानियाँ इसी शैली में लिखी गयी है | उन्होंने कुछ कहानियों में उक्त शैली का उपयोग आंशिक रूप में किया है |

'समांतर चलते हुए' कहानी का उदाहरण-"अभी कल की ही बातें है, सपनों की तरह द्वारों की चौखटों पर अटकी हुई | अनिता से विवाह....गहन उन्माद और मादकता में डूबो देनेवाले सुख-देह पिघलाती गरमाईयाँ और मन को सराबोर करती गहराईयाँ-तन,मन की पूर्णता में हिलोर लेते तीन वर्ष....फिर दो के स्वप्नों को अर्थ देनेवाले एक तीसरे के आने की संभावना |"[१८५]

'अन्तहीन' कहानी का एक उदाहरण-"उस रात ऐसा ही हुआ था | बाएँ हाथ की उँगलियों में सिगरेट का टुकड़ा दबाकर,हाथ को सिर से टीकाकर वह अपने काम में अत्यन्त व्यस्त,डूबा हुआ दिखता था | यह व्यस्तता किस तरह की है कि उसकी कलम रेंग भर रही थी और वह खिड़की के बाहर खड़े दस-बारह यात्रियों के अस्तित्व और उनमें उत्तरोत्तर बढ़ती जाती अधैर्य की हलचल से बेखबर दिखता था |"[१८६]

राजी सेठ के 'दूसरे देशकाल में' शीर्षक कहानी का उदाहरण-"उनके इस तरह शांत, निवृत्त होकर बैठ जाने से मैं एकाएक उद्विग्न हो गयी थी | लगा वह घड़ी अब आ गई है | अब वह मुझे प्रश्नाहत करेंगी | कटघरे में रखेंगी | पूछेंगी-ऐसा क्यों हुआ | क्या हमारे मन में इतना भी सयंम और विश्वास नहीं था कि अपने हिस्से की धूप का इंतज़ार कर सकें ? क्या हमें मालूम नहीं था कि ऐसा कुछ हो जाने से रोहित कानूनी शिकंजे में आ

सकता है | उसकी क्षुब्ध पत्नी इस घटना का उसके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकती है | पहले से चलता आया तनाव और जटिल हो सकता है...ऐसे दूध पीते बच्चे थे क्या हम ? यह मानने का मेरे पास कोई कारण नहीं था कि वह मेरे और रोहित के भीतरी जीवन के बारे में नहीं जानती | इसी बात का तो मुझे रोहित से गिला था | वह होती कौन हैं, इतनी अंतरंग बातों में.... |"[१८७]

'तत-सम' उपन्यास में स्मृतिपरक शैली का उदाहरण दृष्टव्य है-"भीतर कुछ तप गया | एस.के.का स्मरण-दीक्षांत समारोह का दिन | वह उसके हाथ की मुड़ी-तुड़ी नीले काग़ज़ की चिट्ठी | चेहरे पर आते और जाते रंग | उससे तो यह भी पूछा नहीं जा सका कि वह इतना काँप क्यों रहा है ? काँपता कौन था उन दिनों इसतरह | सब अकड़ते थे | फब्तियाँ कसते थे | झाडियों से लगकर सिगरेट फूँकते खड़े रहते थे | और जान-बूझकर रास्ता काटते अपने को जता जाया करते थे | क्लास शुरू होने से पहले उनकी बेंचों पर डंटे मिलते थे | उस सारे हुल्लड़ के रहते क्लास में पहले जाकर बैठने का भी संकट | सब लड़कियाँ दरवाज़े के पास खड़ी रहती थीं-एकजुट | प्रोफ़ेसर के कक्षा में घुसने के साथ अंदर घुसती थीं |"[१८८]

'निष्कवच' उपन्यास में भी स्मृतिपरक शैली प्रयोग दिखायी देता है | 'निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत का आरंभ ही इस शैली से होता है | विशाल माँ के कहने पर जब नीरा को पत्र लिखने बैठता है तब उसके अतीत की कड़ियाँ खुलती जाती है-"उसकी खाट मेरे कमरे में बिछा दी गई थी | वह मेरे साथ स्कूल जाने लगी थी | मेरे साथ खाना खाने लगी थी पता नहीं कहाँ से पा गये उत्साह से माँ मुझे उधर ठेलने लग गई थी | मेरे लिए उस साहचर्य की जरूरत और सघनता को माँ ने स्वयं तय कर लिया

था |"[१८९]

मनोविश्लेषणात्मक शैली :-

आधुनिक साहित्य पर मनोविज्ञान का प्रभाव बढ़ने के साथ इस शैली प्रयोग भी अधिकता से हुआ है | क्योंकि आज लोक जीवन में जितनी उलझने बाहर हैं उससे कई ज़्यादा जटिल उलझने उसके अंतस में हैं | ये उलझने उसे अंदर से नोंच नोंच कर लहूलुहान कर रही हैं | इन आंतरिक संवेगो-संवेदनाओं, द्वंद्वों-गुत्थियों को सुलझाने के लिए इस शैली का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है | डॉ.धनराज मानधाने का कथन है-"उसके माध्यम से मानव चरित्र की विविध परिस्थितियों में प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं का सबसे अधिक निदर्शन संभव है |"[१९०]

राजी सेठ के कथा साहित्य में यद्यपि आंतरिक स्थितियों को अधिक अभिव्यक्ति मिली है तथापि संलापात्मकता का तत्व निरंतर बना हुआ है | राजी सेठ के कथा साहित्य में यह शैली सर्वाधिक सशक्त रूप में परिलक्षित होती है | 'अस्तित्व से बड़ा' कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है-"एक दिन शेष था | आँगन, कमरों, दालानों, कम्पाउंड और शामियानों में बत्तियाँ लग चुकी थीं | मीटर पर भार बढ़ गया था | परीक्षण के लिए बत्ती चालू करते ही एकाएक बिजली चली गयी | मैं बड़े कमरे के बीचोबीच कुर्सी का हत्था पकड़े हुए उस समय अकेली खड़ी थी | उस असावधान क्षण में मुझे लगा, अचानक किसी ने पीछे से आकर मुझे बाहों में भींच लिया है और इतना भिंचा है कि उसने अपने होठों से मेरे होंठ बन्द कर दिये | एक कातर बेसुधी |...वह अनपढ़ आत्मा का पहला एहसास था | एक तपती हुई पिघलन को हठात् मेरे गले में उतारता हुआ वह बोला, इस दुनिया में तुझे मेरे जैसा प्यार करनेवाला, इतनी

ऊष्णता देनेवाला, दूसरा न कोई है, न मिलेगा | इस प्यार को ही नहीं जानोगी तो इस बात को भी नहीं जान पाओगी | फिर उसका एक विक्षिप्त उत्साह से मुझे बार-बार बाँहों में भरना और चुम्बनों की बौछार से लादना | मुझे अपनी बेसुधी याद है और अपना महीनों-सालों तक उस सुधि से कातर काँपना |"[१९१]

'अपने दायरे' कहानी का उदाहरण-"एक असभ्य आंतरिक आक्रोश से सबकुछ तोड़-फोड़ डालने की इच्छा होती है | दालान में लगे बल्ब को पास रखे पत्थर से चकनाचूर कर देने की, और पापा को दालान के ठंडे सर्द अँधेरे में अकेला छोड़ देने की....सुलगते सिगार की व्यथा के साथ...एकदम अकेले...माँ की मौत से फैले,सहमे हुए ठंडे आतंक के बीच पूरी तरह जीवित और त्रस्त...|"[१९२]

'तत-सम' उपन्यास तो एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है | इस उपन्यास के सभी पात्र अंर्तद्वंद्व, मानसिक संघर्ष से पीड़ित है | उदाहरण के लिए वसुधा की मानसिकता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-"अपने हितैषी ? कैसे हैं अपने हितैषी ? किस तरह की है इनकी हित-चिंता ? माथे पर पड़े सिंदूर की तरह ही पोंछ डालना चाहते हैं निखिल के साथ जुड़ा जीवनखंड | जैसे पेंसिल से लिखी गयी थी वह सारी इबारत | रबर लिया और मिटा दिया गया | उन्हें क्या पता कितनी छोटी-छोटी बातों पर बंधक पडी है जिंदगी | निखिल को आम खाने का शौक था तो आम देखने तक की इच्छा नहीं होती |"[१९३]

चेतनाप्रवाह शैली :-

चेतनाप्रवाह शैली आधुनिक युग की उपज है | मनुष्य के अवचेतन में पड़ी गाठों को खोलने की दृष्टि से प्रतिपाद्य शैली

पर्याप्त उपयोगी है | हर क्षण व्यक्ति के मानस में कुछ-न-कुछ घटित होता रहता है | कोई भी अनुभव उसके ह्रदय पर कहीं कोई छाप अवश्य छोड़ता है | कुछ घटनायें जीवन में महत्त्वपूर्ण होती है, कुछ गौण | अनेक भावों पर सामाजिक तथा नैतिक बंधन भी होते है | पर वे भाव भी कहीं मन में टिमटिमाते रहते है | जिन्हें हम पहले असंगतियाँ कहकर टाल देते थे, वे ही अब प्रमुख स्थान ग्रहण कर लेते हैं | उपन्यासों में इस विशुद्ध कृति की मांग बढ़ रही है | इसी माँग को पूरा करने के लिए चेतनाप्रवाह शैली को अपनाया गया है |

ह्रदय की धड़कन में,भाव घनत्व भय-युक्त उत्थान और पतन ने, तार के प्रकम्पन ने उपन्यासकार में स्थान पाया | उपन्यास कला ने मानव की आंतरिक गहराई में प्रवेश करने पर वहाँ चेतना के प्रवाह की उपलब्धि की और इसके रूप में से उसे अपने स्वरूप की सिद्धि के लिए एक नूतन साधन हाथ लगा | पाश्चात्य देशों में तो इसका प्रचार काफी मात्रा में बढ़ा हुआ है किन्तु हिंदी में कुछ ही उपन्यासकार मिलते हैं जिन्होंने इस शैली को अपनाकर पात्र के अंतर मन को पकड़ने की चेष्टा की है | इन उपन्यासकारों में एक है-राजी सेठ, जिन्होंने अपने दोनों उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग किया है |

'तत-सम' उपन्यास की नायिका वसुधा विवेक के प्रति उसके मन में जो भावनायें है | उन भावनाओं को विवेक के सामने प्रकट करना चाहती है | वह सोचती है-"जो कहा नहीं गया अब वह कह दिया जाए | कहकर देख लिया जाए | उत्तर मिल सकता है | शायद न मिले | जानती है निर्द्वन्द्व नहीं है रास्ता | न अबूझ ही | अबूझ होती है कोई बात तो खोलने के उपक्रम में कोई अर्थ हाथ

लगता है | उलझन भरी हो सकती है उन स्थलों पर पैर रखने की चेष्टा जो पहले से ही बियाबाँ करार कर दिये गये हों | उससे भी अधिक कष्टप्रद, निष्ठा के स्तूपों के सम्मुख तनकर खड़े रहना | अपनी तत्परता को अपनी अनिष्ठा की तरह सहना |"[१९४]

'तत-सम' उपन्यास का एक अन्य उदाहरण द्रष्टव्य है-"उन क्षेत्रों में जो उसे नितान्त अपने लगें | तम्बू के अकेले जनविहीन क्षणों में वह अतीत में लौट जाती है...बचपन में माँ और बाबूजी के साथ कश्मीर गयी थी | हरे-भरे पर्वतों की पीठ से रपटकर नीचे नदी के किनारे बैठी हुई घाटियाँ | स्लेटी नीले पत्थरों की देह पर उमंगता छलछलाता जल |...जल के प्रवाह के साथ दौड़ती ध्वनियाँ | पेड़ों के नीचे की धरती पर सुस्ताने बैठी टुकड़े-टुकड़े धूप | खेती की छोटी-छोटी बाडियाँ...छिटपुट मकान | कहीं-कहीं तो...दृश्य की मनोरमता से स्तब्ध हो जाना उसे याद है खेती की छोटी-छोटी बाड़ियाँ | याद है उसके साथ ही उठती एक बैचेन जिज्ञासा वे कश्मीर की घाटियाँ और मनोरस दृश्य वर्तमान के अकेलेपन को काट देते हैं- अतीत वर्तमान में बार बार लौट आता है |"[१९५]

'निष्कवच' के 'वृत्तांत एक' का उदाहरण द्रष्टव्य है-"वह जरा-सी भी उन्मुख होती तो उसे कुछ कहता | प्यार से,फुहार से,भाई की मनुहार से उसके टेढ़े-बाँके कोनों को सहलाता | वह नहीं चाहती थी,वह कौन सी भट्ठी में हाथ डाल रही थी | जितना वह बाहर से दिखता है...दोस्त-प्यार,आत्मीय,अपना जैसा...उतना भर वह नहीं है |...वह निस्संग,निर्मम,दुराग्रही भी उतना ही है..."[१९६]यहाँ 'निष्कवच' के 'वृत्तांत एक' का विशाल नीरा और बासू के संबंधों को लेकर उद्विग्न है |

'निष्कवच' के 'वृत्तांत दो' का उदाहरण- "मैं कितना क्रूर हूँ न,न टूटती चीजों को तोड़ा,न छूटती को छोड़ा | देश भी | धर्म भी | प्यार भी | कोंचने के लिए रिश्ता भी कौन सा-माँ | माँ क्या मेरी छोटी बहन है ?"[१९७]

भावात्मक शैली :-

जहाँ पर भावों का आवेग प्रच्छन्न न रहकर प्रत्यक्ष हो जाता है तथा आतुरता व्यग्रता स्पष्ट होने लगती है वहाँ लेखिका भावात्मक शैली को अपनाती है | राजी सेठ ने 'तत-सम' उपन्यास में पात्रों की भावाकूल मनस्थिति को प्रकट करने के लिए भावात्मक शैली का प्रयोग किया है | 'तत-सम' उपन्यास भावप्रधान उपन्यास है | इस उपन्यास का भाव पक्ष प्रबल बन गया है | विवेक के दर्द की तीव्रता व निरंतरता का एहसास कराती पंक्तियाँ-"तुम देख रही हो, यह अलाव मेरे भीतर जल रहा है-ऐवरी मिनट, एवरी लिविंग मोमेंट | यह ऐसा अंगारा है जिस पर कभी राख नहीं जमती |"[१९८]अन्य कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-"कुछ था जो नहीं रहा तो कुछ नहीं रह गयी वह | 'कुछ' था तो सबकुछ थी वह | सार्थकता-अपनी भी-इतनी बेगानी क्या ?"[१९९]"जिन दु:खों के चेहरे नहीं होते वहीं जानलेवा भी होते है | चेहरेवाले दुखों में तो सबकी सहानुभूति मिल जाती है |"[२००]

पत्रात्मक शैली :-

पत्रात्मक शैली मन के गुह्यतम भावों को व्यक्त करने का सशक्त उपकरण है | पत्रों द्वारा पात्र मन के जटिल तथा गहरी बातों को स्पष्ट कर पाते हैं |

राजी सेठ ने 'तत-सम' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग काफी हद तक किया है | जो बाते पात्रों के आमने-सामने जिस

भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना मुश्किल होता है उन्हें पत्रों की विवरणात्मकता में आसानी से कहा जाने लगा है | 'तत-सम' उपन्यास के उत्तरार्ध में वसुधा और विवेक, वसुधा और कल्पना, वसुधा और आनंद के बीच पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है | 'तत्-सम' के यह पात्र अलग-अलग शहरों में वास करते हैं | इसलिए इन्हें आपस में संबंध तथा मन की बातों को पत्रों द्वारा ही बताया जा सकता है | वसुधा,विवेक और आनंद को अभिव्यक्ति देनेवाले पत्रों के कुछ वाक्यों का उद्धरण -

प्रिय वसुधा

....

"यह कितनी बड़ी विडम्बना है वसुधा कि तुम्हें लेकर मैंने जो कुछ भी करना चाहा,मौका आने पर ठिक उसके विपरीत ही किया | यूथ फेस्टिवल में तुम्हारा आना मेरे लिए कायाकल्प था- जीवन का अलभ्य-आवाहन | यद्यपि इस कहने को भी तुम एक छलावा ही मानोगी क्योंकि मैंने तुम्हारे जाते ही तुम्हें एक पत्र लिखा था- मैं मुक्त हूँ | अपने केंद्र में बिंधा,अपनी निजी मूल्यवत्ता के आभास में मग्न |"[२०१]

तुम्हारा अपना ही

विवेक

वसुधा अपनी सहेली कल्पना को सागर का वर्णन करती पत्रात्मक शैली में लिखती है-

'प्रिय कल्पना !

....

"लगता है आकाश में रक्ताभ कैनवास पर कोई अनदेखा हाथ अपना दृश्य उभार रहा है-समग्रता का दृश्य...समुद्र की तरह विह्वल हलचल का दृश्य, आकाश और समुद्र के अलगाव का दृश्य, हर चीज़ को रंग-रेखा आकार देनेवाला दृश्य...और दिशाओं को यथास्थित बाँट देनेवाला दृश्य...यह सब हो रहा है एक साथ, एक बारगी...एक तल्लीन ठहराव के साथ |"[२०२]

सस्नेह-तुम्हारी
वसुधा

प्रिय वसुधा

....

"तुम सोचने का समय लो | अपने को टटोलो | ईमानदारी से | निष्पक्ष होकर | जिस स्थिति में तुम हो, उसमें किसी का हस्तक्षेप ठीक नहीं,मेरा तो और भी नहीं | यह बात मैं पूरे उत्तरदायित्व और शुभांक्षा से कह रहा हूँ | किसी दूसरे की लाभ-हानी सोचकर या किसी दूसरे के मुलाहज़े-मुरव्वत में किये गये

फ़ैसले का मुलम्मा जल्दी उतर जाता है,अपना आत्मविश्वास टूटता है वह अलग |"[२०३]

तुम्हारा
आनंद

डायरी शैली:-

राजी सेठ ने डायरी शैली का उपयोग 'अपने दायरे' कहानी ने आंशिक रूप में किया है | 'अपने दायरे' कहानी के मृत माँ की पीड़ा उसके बेटे के समक्ष डायरी पड़ने पर ही स्पष्ट हो जाती है | कुछ उदाहरण-

"३ जुलाई:कितनी ममता उस ममत्वहीनता में है जो नन्ही-नन्ही आशाओं, अपेक्षाओं को रोज-रोज के जीने-मरने से मुक्ति दिला देती है...एक ही बार मेंश्मशान का सा सन्नाटा मन के द्वार बाँध जाती है |"[२०४]

"१७ अगस्त:बहुत, बहुत कुछ कहना चाहती हूँ पर कोई रूपाकार नहीं उभरता | जीने की पीड़ा,अव्यक्त की पीड़ा से अधिक बड़ी लगती है...इसीलिए लिखना निरर्थक लगता है...एक खोखला शोर |"[२०५]

"४ सितंबर:किसी मकान के अंदर घिरी हुई दैनिक जीवन को जीती इकाई का नाम ही तो नहीं है जीवन;वह सब भी तो है जो हमारे स्पंदनों, स्फुरणों, अनुभूतियों और विचारों से बना है |"[२०६]

"३ अक्टूबर:अभिव्यक्ति के पाँव में बंधी हुई ज़जीरों का बोझ और रुदन दोनों मेरे कानों तक पहुँचते हैं और अपने पर दया आती है | अब किसी बात का उत्तर नहीं बन पड़ता |"[२०७]

"२५ दिसंबर:क्या केवल समय ही बीत रहा है...? एक पूरी आयु बीत रही है | साथ ही ढेर सी आकांक्षाएं और सपने...|"[२०८]

संवाद शैली :-

संवाद तात्विक दृष्टि से देखा जाए तो नाटकीय तत्व है | संवाद नाटकों के प्राणतत्व होते हैं तो दूसरी ओर वे कथा साहित्य में प्राण फूँकते है | वे कथ्य और उद्देश्य के संवाहक होते हैं तो कभी कथ्य की संवेदना और समस्या की सही पहचान करा देने में भी सहयोग पहूँचाते हैं | कथा विकास एवं पात्रों के चरित्र चित्रण में स्वाभाविकता लाने में संवाद महत्त्वपूर्ण होते है | साहित्यकार के लिए संवाद एक ऐसा उपकरण है, जिसके प्रयोग से वह बहुत सारे काम करवा लेता है |

राजी सेठ ने संवाद शैली का प्रयोग अपनी कथा साहित्य में प्रचुर मात्रा में किया है | राजी सेठ के 'दूसरे देश काल में' कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है- "रोहित को कभी कहे मेरे शब्द, उन्होंने मुझे लौटाये थे | निहित व्यंग्य में ! मैं संकुचित हुई थी | रोहित को हाथ का बना स्वेटर बहुत भाता है क्योंकि उसे फंदा-फंदा करके बुना जाता है | पहनने वाले के बारे में सतत सोचते ! या रोहित का ही कथन था |

"आपको रोहित ने यहाँ भेजा होगा ?"

"नहीं"

"आप को रोहित ने यह सब बताया होगा ?"

"हाँ"

"वह आपको कैसे बता सका मेरा मतलब है,यह सब....|"

"वही जाने !"

"मैं आपको काफी गलत समझती थीं |"

"यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है....! ऐसे आघातों की बरसों से अभ्यस्त हूँ मैं...."[२०९]

राजी सेठ की 'परतें' कहानी का उदाहरण-

"कहाँ की रहनेवाली हो ?"

"फैजाबाद की |"

"कब से हो यहाँ ?"

"ढाई साल से |"

"कौन-कौन हैं पीछे घर में ?"

"हम छह बहनें |"

"भाई ?"

"कोई नहीं |"

"बाप ?"

"मजूरी करता है |"

"तुम्हें कैसे भेज दिया ?"

"भाग आयी |"[२१०]

राजी सेठ की 'बुर्जियों की छाँह तक' कहानी पूरी तरह संवाद शैली में ही लिखी गई है | उदाहरण द्रष्टव्य है-

"उस न पाने का दर्द है तुम्हें?"

"तुम्हें नहीं है क्या?'

"तो फिर...तो फिर हम साथ क्यों नहीं रहने लगते?"

"यह फिर से वहीं जाना हुआ जहाँ से चले थे | साथ रहना मतलब टकराहट...साथ रहना मतलब शोर..और हम दोनों ही अपने को डुबो देने वाले शोर से डरते हैं..शांति चाहिए थी तुम्हें भी और मुझे भी..."

"तो फिर शांति ही हमारा लक्ष्य हुई...?"

"लक्ष्य नहीं ! साधन हुई |"

"किसका?"

"जिसे तुम पाना चाहते हो,जिसे मैं पाना चाहती हूँ...उस अदृष्ट का-जो दिखता नहीं परन्तु जिसका भाव महसूस होता है |"[२११]

'तत-सम' का उदाहरण-

"अच्छा बताइये | कौन-कौन है घर में |"

"सब है | माँ, भैया,भाभी,बच्चे | छोटा भाई बनारस में इंजीनियरिंग पढ़ता है |"

"पिताजी ?"

"गुज़रे अरसा हो गया"

"और हस्बेंड को ?"

"एबाउट सिक्स इयर्स एक्सीडेंट |"

"तभी से नौकरी करती हैं ?"

"हूँ s s....."

"फिर से सैटल हो जाएँ यह क्या कभी नहीं सोचा ?"

"किसी न किसी तरह चलती तो रही है बात, चाहे घरवालों की जिद के कारण | पर.....कहा था न हालात हमेशा अपने हाथ में नहीं होते | हालात की अनुकूलता पर आपका कुछ ज़्यादा विश्वास है | उतना सीधा कहाँ होता है सब कुछ ?"[२१२]

स्वप्न शैली:-

मानव-मन अनेक उड़ान भरता रहता है | वह अर्ध-चेतन अवस्था में भी कार्यरत होता है | व्यक्ति के चित्र को प्रकट करने के लिए स्वप्न शैली का प्रयोग किया जाता है| स्वप्न एक मानसिक प्रकिया है और इसके पीछे एक इतिहास छिपा होता है | मनुष्य जीवन की जटिल समस्याओं को काल्पनिक रूप में सुलझाने का प्रयत्न स्वप्न में है | स्वप्न मानव मन के व्यक्तित्व को प्रकट

करता है,चाहे वह किसी भी रूप में प्रकट क्यों न हुआ हो | स्वप्न में देखी हुई वस्तुएँ सिर्फ प्रकट नहीं होती, मगर व्यक्ति की मूल इच्छा, प्रवृत्ति और रूचि मिश्रित होकर प्रकट होती है | स्वप्न अचेतन मन में सुप्त अथवा दमित इच्छाओं को जानने का महत्त्वपूर्ण साधन है |

राजी सेठ ने 'तत-सम' उपन्यास में स्वप्न शैली का प्रयोग उपन्यास की नायिका वसुधा की मातृत्व भावना को उजागर करने के लिए किया है | निखिल के मृत्यु के समय वसुधा गर्भवती थी | वह निखिल की आखिरी निशानी को बचाए रखना चाहती है,पर वह नियति के हाथों मजबूर हो गई थी | वसुधा स्वप्न में अपने बच्चे के शव को देखती है, जिसे कमरे में एक सफेद चादर में लपेटकर रखा गया है | बच्चे के शव की ऐसी दुर्दशा उसे असहाय बना देती है | वह अपने बच्चे को विघटित होते देख नहीं सकती | वसुधा का मन आतंकित है | अपने बच्चे को तिल-तिल विकृत विघटित होते देखने की विवशता से वह भयभीत है | वह बच्चे को विघटित होने की यातना से बचना चाहती है | इसलिए वह घर के सदस्यों के साथ बाहर जाना चाहती है | किन्तु उसका ढाँढस घड़ी भर ही टिकता है | वह नहीं चाहती कि उसका बच्चा अनजाने घर में परित्यक्त पड़ा सड़े-"नहीं | वह ऐसा होने ही नहीं देगी | कनपटियाँ बजने लगी हैं थप-थप | आँखे चोर-सी चौकन्नी | हाथ में एक बड़ा सफ़ेद-सा थैला |....कुछ भूल आयी यह कहकर वह घर के अन्दर घुसी है !....धूमिल अँधेरा है | बच्चे को उसने थैले में भरकर थैले का मुँह बाँध दिया है |...पीछे का दरवाज़ा खोल लिया है |....अब वह भाग रही है बदहवास...|....वे थोड़ी देर प्रतीक्षा करेंगे....फिर ढूँढ़ने लगेंगे...फिर पीछा करेंगे |....उसे भागना है....तेज़...और

तेज़...और....और तेज़...| छप्प....छपाक...| ओह....ओफ | नींद टूट गई | चेहरा तर-बतर |....क्या नदी के पानी से ?....हाँफ रही है | देह के रोएँ अभी चौकन्ने | बाहर अँधेरा है | ठिठका हुआ अँधेरा है....|"[२१३]

डॉ.कश्मीरी लाल ने राजी सेठ की भाषा के बारे में कहा है- "राजी सेठ खुली भाषा व खुले शब्दों की अपेक्षा संकेतों,प्रतीकों,चित्रों या बिंबों से अधिक काम लेती हैं | संवेदना के स्तर पर उनकी भाषा काव्यात्मक अभिव्यक्ति को अपनाती है | इसी कारण उनकी भाषिक संरचना में विविध रंग दिखाई पड़ते हैं | शब्दों की मितव्ययिता राजी सेठ को अत्यंत प्रिय है |"[२१४]

संदर्भ सूची

१. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन- रमेश दवे, पृष्ठ. ८६
२. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन- रमेश दवे, पृष्ठ. ८७
३. भाषा,लिपि व साहित्य- डॉ.बलभीमराज गोरे, पृष्ठ. १७५
४. कहानी : नई कहानी - डॉ.नामवरसिंह, पृष्ठ. ३७
५. राजेंद्र यादव कथ्य और दृष्टि- डॉ.शशिकला त्रिपाठी, पृष्ठ. २३६
६. पुन:वही (अन्धे मोड़ से आगे)-राजी सेठ,पृष्ठ.. ६२
७. गलत होता पंचतंत्र (अन्धे मोड़ से आगे) -राजी सेठ, पृष्ठ. १०८
८. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११०
९. तीसरी हथेली - राजी सेठ पृष्ठ.६४
१०. योग-दीक्षा (तीसरी हथेली) - राजी सेठ,पृष्ठ.७१
११. नगर-रसायन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०९
१२. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ. ३०
१३. तदुपरांत (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ. ३५
१४. 'तत-सम'- राजी सेठ, पृष्ठ.३३
१५. 'तत-सम'- राजी सेठ, पृष्ठ.१५
१६. 'निष्कवच'- राजी सेठ, पृष्ठ.६८
१७. राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि- डॉ.कश्मीरी लाल,पृष्ठ.१४१
१८. काव्य बिंब - डॉ.नगेंद्र, पृष्ठ. ७
१९. राजी सेठ :कथा सृष्टि एवं दृष्टि -डॉ.कश्मीरी लाल,पृष्ठ.१४१
२०. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. २८
२१. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ ५०
२२. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१४
२३. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृष्ठ.६५

२४. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.३०

२५. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६२

२६. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.४३

२७. 'तत-सम' उपन्यास - राजी सेठ, पृष्ठ.१५१

२८. निष्कवच प्रथम वृत्तांत- राजी सेठ, पृष्ठ.२६

२९. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८

३०. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.२२

३१. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०

३२. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८

३३. विकल्प (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.४७

३४. आगत (यह कहानी नहीं) -राजी सेठ, पृष्ठ.४८

३५. एक कटा हुआ कमरा(ग़मे-हयात ने मारा)-राजी सेठ,पृष्ठ.१०२

३६. 'तत-सम' उपन्यास - राजी सेठ, पृष्ठ.१५

३७. निष्कवच- वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.१६

३८. निष्कवच- वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.१८

३९. निष्कवच- वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.६४

४०. निष्कवच- वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.१०१

४१. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.२२

४२. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२१

४३. घोड़ों से गधे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ पृष्ठ.६०

४४. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.८८

४५. योग-दीक्षा (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.७१

४६. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१४१

४७. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१४८

४८. विकल्प (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.४१

४९. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.६४
५०. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.६७
५१. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७३
५२. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७७
५३. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७२
५४. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.१६
५५. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.२१
५६. परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.२९
५७. परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.३२
५८. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.३७
५९. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.११५
६०. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.२०७
६१. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे)- राजी सेठ, पृष्ठ.१६
६२. अभी तो (दूसरे देशकाल में) -राजी सेठ, पृष्ठ.६७
६३. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ पृष्ठ.१५
६४. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे)- राजी सेठ, पृष्ठ.१६
६५. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
६६. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.३८
६७. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.२
६८. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.१५
६९. परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.३०
७०. पुतले (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.४७
७१. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.६
७२. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.६५
७३. निष्कवच-वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.५४

७४. निष्कवच-वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.११६
७५. आधुनिक कथा साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप और विकास - वीणा दाढे, पृष्ठ.२०
७६. आधुनिक कथा साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप और विकास - वीणा दाढे, पृष्ठ.२०
७७. राजी सेठ :कथा सृष्टि एवं दृष्टि-डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.१२३
७८. काया प्रवेश (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.३९
७९. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.२९
८०. किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का(दूसरे देशकाल में)-राजी सेठ, पृष्ठ.२५
८१. घोड़ों से गधे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.६१
८२. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७३
८३. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) –राजी सेठ, पृष्ठ.८०
८४. पासा (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.७७
८५. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१०८
८६. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१३५
८७. निष्कवच - वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.६०
८८. राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि- डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.१५०
८९. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे)- राजी सेठ, पृष्ठ.५४
९०. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.७८
९१. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२३
९२. योग-दीक्षा (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.८१
९३. स्त्री (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ. ५०
९४. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में)- राजी सेठ,पृष्ठ. ८२
९५. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ. ८८

९६. अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ. ६७
९७. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ. ४०
९८. निष्कवच वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.२७
९९. राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि -डॉ.कश्मीरी लाल,पृष्ठ. १५८
१००. बिहारी: एक अध्ययन - डॉ.अश्विनी पाराशर, पृष्ठ.१३४
१०१. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३०
१०२. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ,पृष्ठ. ४७
१०३. एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.६१
१०४. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.३४
१०५. यात्रा-मुक्त - राजी सेठ, पृष्ठ. ४६
१०६. बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ. ८५
१०७. निष्कवच - वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.३८
१०८. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. ३२
१०९. पुन: वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. ६६
११०. अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. १२५
१११. खेल (यात्रा-मुक्त)- राजी सेठ, पृष्ठ. १४
११२. उन दोनों के बीच (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ. ९४
११३. तदुपरांत (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ. ३७
११४. दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ. ९६
११५. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ. २०
११६. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ. ४३
११७. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ. ६४
११८. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ. १०७
११९. निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.१९
१२०. निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.८३

१२१.किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. ९७
१२२.‘तत-सम’ - राजी सेठ पृष्ठ. ७४
१२३.‘तत-सम’ - राजी सेठ पृष्ठ.९९
१२४.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.९९
१२५.किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.९४
१२६.तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृष्ठ.६४
१२७.दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ.९३
१२८.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११३
१२९.आमने-सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.२१
१३०.निष्कवच - राजी सेठ, पृष्ठ.१०८
१३१.‘तत-सम - राजी सेठ. पृष्ठ.१५
१३२.‘तत-सम - राजी सेठ. पृष्ठ.१५८
१३३.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे -राजी सेठ, पृष्ठ,१६
१३४.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे)-राजी सेठ, पृष्ठ.१९
१३५.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११५
१३६.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११५
१३७.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
१३८.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५७
१३९.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.९९
१४०.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.९९
१४१.राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि -डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.१३३
१४२.मीलो लंबा पुल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.९१
१४३.खेल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६
१४४.यात्रा-मुक्त - राजी सेठ, पृष्ठ.६०
१४५.तुम भी (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७८

१४६.बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) राजी सेठ, पृष्ठ.४७
१४७.बुर्जियों की छाँह तक (ग़मे-हयात ने मारा)-राजी सेठ पृष्ठ.१३२
१४८.निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.५६
१४९.'तत-सम - राजी सेठ. पृष्ठ.१०७
१५०.अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.६८
१५१.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.१०१
१५२.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.१०२
१५३.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.१०५
१५४.राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि -डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.१२७
१५५.उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ. पृष्ठ.६७
१५६.पुल (यह कहानी नहीं) -राजी सेठ, पृष्ठ.१७
१५७.डोर (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.५७
१५८.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.४२
१५९.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.४२
१६०.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.९५
१६१.निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.४८
१६२.निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.४४
१६३.राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृष्ठ.१०४
१६४.उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३९
१६५.यात्रा-मुक्त - राजी सेठ, पृष्ठ.४७
१६६.स्त्री (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.४९
१६७.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.१०१
१६८.आमने-सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८
१६९.अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.७५
१७०.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.१११

१७१. निष्कवच वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.६८
१७२. 'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१२१
१७३. निष्कवच वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.११०
१७४. मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य का मनोविश्लेषनात्मक अध्ययन- डॉ.नीरजा, पृष्ठ.१७३
१७५. हिंदी उपन्यास कला - डॉ.रामलखन शुक्ल, पृष्ठ.४७
१७६. उपन्यास का मनोविश्लेषण - डॉ. धनराज मानधानें, पृष्ठ.५२२
१७७. तुम भी (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७१
१७८.दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ.९५
१७९.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१६५
१८०.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.१००
१८१.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२१
१८२.खेल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.०४
१८३.आमने-सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८
१८४..डोर (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.५४
१८५.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे)-राजी सेठ, पृष्ठ.१६
१८६.अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.१२०
१८७.दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ.९२
१८८.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१२
१८९.निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.१०
१९०.मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्याएँ - डॉ.मालती जाधव, पृष्ठ.३०६
१९१.अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५४
१९२.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५८
१९३.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.२४

१९४.'तत-सम' - राजी सेठ,पृष्ठ.१२२

१९५'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.३४

१९६.निष्कवच वृत्तांत एक -राजी सेठ, पृष्ठ.२८

१९७.निष्कवच वृत्तांत दो -राजी सेठ, पृष्ठ.६८

१९८.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.५४

१९९.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.३६

२००.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.५६

२०१.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.२३१

२०२.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१७१

२०३.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.२४१

२०४.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५

२०५.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५

२०६.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५

२०७.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५

२०८.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५

२०९.दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ.१९७

२१०.परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.२३

२११.बुर्जियों की छाँह तक (ग़मे-हयात ने मारा)-राजी सेठ, पृ.१३१

२१२.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१९५

२१३.'तत-सम' - राजी सेठ, पृष्ठ.१२७

२१४.राजी सेठ कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, आवरण पृष्ठ पर मुद्रित परिचय से